



# ज्ञानामृत

वर्ष 49, अंक 6, दिसंबर 2013 (मासिक),  
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये



1. नागपुर- 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के सामाजिक न्याय व कल्याण मंत्री भाता शिवाजीराव मोघे, भाता निजार जुमा, ग्लोबल लॉजिक के प्रबंध निदेशक भाता शशिकांत चौधरी, ब्र कु सुदेश बहन, ब्र कु पुष्पारानी बहन तथा अन्य। 2. मैंगलोर- 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में एम. आर. पी. एल. के प्रबंध निदेशक भाता पी. पी. उपाध्याय, मैंगलोर टुडे के सम्पादक भाता वी यू. जोर्ज, लेखिका बहन सारा अबुवक्कर, भाता निजार जुमा, ब्र कु निर्मला बहन तथा अन्य सुप्रसिद्ध गणमान्य जन।



1. भरतपुर- हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भाता जगन्नाथ पहाड़िया से ज्ञान-चर्चा करते हुए ब्र.कु.कविता बहन। 2. कटक (कॉलेज स्ववाचर)- उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भाता आदर्श कुमार गोयल का स्वागत करते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन। 3. भद्रक-नवनिर्मित सेवाकेन्द्र भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमाहिनी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.लीला बहन तथा अन्य। 4. संगमनेर (ताजणोमळा)- महाराष्ट्र के गृहमंत्री भाता आर.आर.पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीला बहन तथा ब्र.कु.विष्णु भाई। 5. वेमगल- कर्नाटक के मुख्यमंत्री भाता सिद्धारमैया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शकुन्तला बहन। 6. दिल्ली (मालवीय नगर)- दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष डा.योगानन्द शास्त्री को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुन्दरी बहन तथा ब्र.कु.नीरू बहन। 7. सुन्नी (शिमला)- सांसद बहन रानी प्रतिभा सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शकुन्तला बहन। साथ में ब्र.कु.रेवादास भाई। 8. भुवनेश्वर- दादी सन्देशी की छठी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देते हुए ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.कमलेश बहन तथा अन्य। 9. हैदराबाद (शान्ति सरोवर)- चैतन्य देवियों की ज्ञांकी का उद्घाटन करते हुए आंध्र प्रदेश के पंचायत राजमंत्री भाता जनार्दंडी। साथ में है ब्र.कु.कुलदीप बहन तथा अन्य। 10. अहमदाबाद- शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा अभियान के समापन समारोह में मंचासीन हैं मेयर बहन मौनाक्षी पटेल, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.चन्द्रिका बहन, ब्र.कु.शारदा बहन, ब्र.कु.वेदान्ती बहन, टाइम्स आफ इन्डिया के सम्पादक भाता अजय उमाट तथा अन्य।

संजय की कलम से ..

## सिनेमा और नावल के घेरे से बाहर

निर्विकार जीवन में एक अनोखा आनन्द और एक पवित्र मस्ती है। जीवन को निर्विकार बनाने के लिए जैसे अन्न-दोष से बचना ज़रूरी है, वैसे ही संग-दोष से भी बचना आवश्यक है। मनुष्य पर संग का रंग बहुत जल्दी चढ़ता है और बुरे संग का प्रभाव और भी जल्दी होता है। अतः कहावत भी है कि सत्संग मनुष्य को तारता है और कुसंग डुबोता है। कुसंग में सिनेमा और नावल भी शामिल हैं। ये तो बुराई के घर ही हैं! परन्तु आज इनका घेरा बहुत बड़ा है। हर बुक स्टाल पर सिने-पत्रिकायें और नावल ही अधिक संख्या में पड़े होते हैं। रात-दिन लोग रेडियो, मोबाइल या अन्य साधनों से फिल्मी गीत सुनते रहते हैं। यदि कोई न भी सुनना चाहे तो भी अपने साधनों की आवाज़ को इतना ऊंचा कर देते हैं कि दूसरे के कान में भी आवाज़ जाती है।

### मन बहलाव या मन बहकाव

कई लोग यह तर्क देते हैं कि सिनेमा आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कार है और मन-बहलाव का एक अच्छा साधन है। विचार कीजिए, मन-बहलाव का साधन है या मन-बहकाव का? फिल्मों ही से तो आजकल के लोग विलास-वृत्ति, फैशन, अंग-प्रदर्शन तथा बेशर्मा का प्रदर्शन सीखते हैं। शराब, जुआ,

सिगरेट, बड़े मचल-मचलकर बातचीत करना इत्यादि – ये सभी आदतें सिनेमा ही से तो आती हैं।

### अच्छी फिल्म किसे कहेंगे?

कई लोग यह भी कहते हैं कि कई-कई फिल्में कुछ अच्छी भी होती हैं। अच्छी फिल्में किन्हें कहा जाता है? क्या कोई ऐसी फिल्म होती है जिसमें कि नायक का किसी कन्या या महिला के साथ अवैध सम्बन्ध, कोई वासना-पूर्ण सम्पर्क जिसे आज लोग 'लव' (Love) का नाम देते हैं, न होता हो? क्या कोई ऐसी फिल्म होती है जिसमें लड़ाई-झगड़ा, अर्द्ध-नग्न चित्र या काम-वासना को उभारने वाले दृश्य या चोरी-डाका इत्यादि जैसी बातें न होती हों? ऐसी कोई फिल्म होती ही नहीं है। हाँ, इनके बिना होती हो तो वह देखिए।

### दम्भपूर्ण आचरण से

### कैसा मनोरंजन?

नेत्रों द्वारा देखे गये चल-चित्रों का तथा कानों द्वारा सुने गये गीतों का हमारे मन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। क्योंकि इनको ऐसे मनोवैज्ञानिक तथा कलापूर्ण ढंग से और सरस बनाया जाता है कि ये मनुष्य के मन पर गहरी छाप डालते हैं। यदि किसी अच्छे परिवार के लड़के या लड़कियाँ अवैध सम्बन्ध जोड़ें अथवा जेब काटें या दम्भपूर्ण आचरण करें तो उनके

## अमृत-सूची

- ◇ वृत्ति द्वारा वृत्ति का परिवर्तन (सम्पादकीय) ..... 5
- ◇ घर बैठे मिली रजिस्ट्री ..... 7
- ◇ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी ..... 8
- ◇ 'पत्र' संपादक के नाम ..... 10
- ◇ ईश्वरीय कारोबार में ..... 11
- ◇ ज्ञान सरोवर में आठ डुबकियाँ (कविता) ..... 14
- ◇ साथी बने हो तो बने रहना .... 15
- ◇ लाभकारी होती है ..... 18
- ◇ मिला कर्मगति का ज्ञान ..... 19
- ◇ क्रोध का शमन हुआ ..... 20
- ◇ क्रोध को पराजित करो ..... 21
- ◇ शान्ति है जीने की ऊर्जा ..... 22
- ◇ लुट जाने का दर्द ..... 23
- ◇ आत्म प्रबन्धन से ..... 24
- ◇ मैं और मेरा....(कविता) .... 26
- ◇ विदेश में देखी ..... 27
- ◇ सच्चे प्रेम के आँसू ..... 29
- ◇ सचित्र सेवा समाचार ..... 30
- ◇ श्रद्धांजलि ..... 32
- ◇ नूतन चिन्तन....(कविता) .... 33
- ◇ सृष्टि का शोकेस ..... 33
- ◇ राजयोग द्वारा जीवन ..... 34

### सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -  
09414006904, 09414423949  
hindigyanamrit@gmail.com

अभिभावकों को यह बात असह्य होगी परन्तु सिनेमाघर में वे ऐसे आचरण को 'मनोरंजन' का नाम देकर देखते हैं और बच्चों को भी दिखाते हैं – यह तो बहुत ही हानिकर बात है। अवश्य ही इससे संस्कार बिगड़ेंगे।

### उद्देश्य है धन अर्जन न कि जन कल्याण

फिर, इन्हें कोई जनता के सुधार के लिये, उनके कल्याण की दृष्टि से तो बनाया नहीं गया होता बल्कि यह तो एक अच्छा ख़ासा व्यवसाय है, इन्हें धन कमाने की दृष्टि से ही बनाया जाता है। गीत और कहानी लिखने वाले तथा इन पर धन खर्च करने वाले, सभी के मन में यह बात रहती है कि इन्हें ऐसा बनाया जाये कि ये खूब चल निकलें। वे वासना-उत्तेजक दृश्य एवं गीत को 'लव' का नाम देकर तथा लड़ाई-झगड़े इत्यादि को साहस एवं 'एडवेंचर' (Adventure) का नाम देकर तथा अशिष्ट या अभद्र मज़ाक को हास्य अथवा 'फन' (Fun) का नाम देकर इन्हें व्यापारिक दृष्टि से सफल बनाना चाहते हैं। अतः इनसे चरित्रोत्थान की या पवित्र हास्य की या बुद्धि के लिए अच्छे वैचारिक भोजन की कैसे आशा की जा सकती है? ऐसी फ़िल्मों को देखने वाले युवक ही तो महिलाओं से छोड़छाड़ (Eve-

teasing) करते, बसों में अभद्रता से व्यवहार करते और खर्चीले फ़ैशन पर धन का अपव्यय करते हैं। इन फ़िल्मों को देखने वाली महिलाएं, लज्जा (Modesty) जो नारी का विशेष गुण माना जाता है, को छोड़ देती तथा घर में सेवा करने के भाव को छोड़कर आराम तथा सज्जधज का जीवन व्यतीत करना चाहती हैं।

### व्यसन जैसी गुलामी

फ़िल्म से तथा फ़िल्मी गीतों से सही अर्थ में मन-बहलाव हो भी कैसे सकता है? इनमें तो बहुत-से दृश्य तथा गीत ऐसे भी होते हैं, जोकि मनुष्य के मन को उदास करने वाले होते हैं। देखा गया है कि ये तो एक व्यसन की तरह मनुष्य को अपना गुलाम बना लेते हैं। मनुष्य में दिनोदिन अधिक गीत सुनने की तथा अधिकाधिक संख्या में सिनेमा देखने की आदत पड़ने लगती है। गोया यह आदत एक नशे की तरह उसके मन को भीतर से उकसाती है कि वह और भी अधिकाधिक गीत सुने, सिने-पत्रिका में अभिनेताओं के रंग-ढंग, उनके अन्दाज़ देखे और नावल पढ़े। तीन घंटे सिनेमाघर में फिल्म देखने के बाद दिन के शेष घंटों में आने वाली विषम परिस्थितियों में यदि मन बहला हुआ तथा ताज़ा न रहे तो इसे हम कैसे मन-बहलाव (Recreation) तथा ताज़गी (Refreshment) का साधन कहेंगे?

### यथार्थ आत्म-बोध और ईश्वरानुभूति का अभाव

कई लोग यह तर्क देते हैं कि इनमें देवताओं के तथा भगवान के भी कुछ दृश्य होते हैं, उनकी भी कुछ चर्चा होती है। परन्तु सत्य बात यह है कि देवताओं तथा भगवान-सम्बन्धी भी जो सामग्री इनमें होती है, वह कोई यथार्थ आत्म-बोध तथा ईश्वरानुभूति पर तो आधारित होती नहीं है। उनमें प्रायः मिथ्या ज्ञान तथा अन्ध-विश्वास पर आधारित संवाद होते हैं और कई बार तो इन पर सूक्ष्म रूप से व्यंग भी होता है।

### ऐन्द्रिय भोग और उच्छृंखलता

आज अधिकतर युवा अच्छी कवितायें याद करने की बजाय 'लव' के फ़िल्मी गीत गुनगुनाते सुने जाते हैं! अपने पाठ्य विषयों में अधिक ध्यान देने तथा परिवार-सेवा एवं समाज-सेवा करने की बजाय सिनेमा और टी.वी. (T.V.) देखने के अधिक रसिया हो जाते हैं। परिणाम यह है कि आज पाश्चात्य देशों की तरह हमारे देश में ऐन्द्रिय भोगों की छूट (Permissiveness) तथा उच्छृंखलता ही नैतिकता और चारित्रिक मूल्यों का स्थान लेते जा रहे हैं। अतः यदि हम अपने देश का, युवा-पीढ़ी का तथा अपना भविष्य उज्वल देखना चाहते हैं तो हमें इस बुराई से बचना होगा। ❖

## वृत्ति द्वारा वृत्ति का परिवर्तन

**क**ई बार यह सवाल उठाया जाता है कि विचार और वृत्ति में क्या अन्तर है। वृत्ति भी विचार ही है परन्तु जब एक ही प्रकार के विचार बार-बार मन में उठते हैं और कर्म में भी आते हैं तो वह व्यक्ति की वृत्ति कहलाती है। जैसे एक शब्द है त्याग और दूसरा शब्द है त्याग-वृत्ति। दोनों में क्या अन्तर है? कई परिस्थितियों में किसी विशेष प्रेरणा के वश, अच्छे संग के प्रभाव से या मजबूरी से हम कई बातों का त्याग कर देते हैं परन्तु उस प्रभाव, परिस्थिति, मजबूरी आदि के पूरा होते ही हम पुनः पुराने ढर्रे पर लौट आते हैं। इसका अर्थ यह है कि हमने अल्पकाल के लिए त्याग किया पर त्याग-वृत्ति नहीं बनाई। वृत्ति का अर्थ है संस्कार। वृत्ति निर्मित होने पर, परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल वह प्रकट होती ही रहती है।

### वृत्ति से व्यक्तित्व की पहचान

वृत्ति अर्थात् एक ही दिशा में बार-बार उठने वाले दृढ़ विचार। ये विचार वाचा और कर्म में आते-आते हमारे व्यक्तित्व को उसी रूप में ढाल देते हैं और वैसी ही हमारी पहचान बना देते हैं। फिर लोग उसी रूप में हमें पहचानने लगते हैं। जैसे सुनने में आता है कि अमुक व्यक्ति अपराध-वृत्ति का है, अमुक में दया-वृत्ति बहुत है,

अमुक की क्रोध-वृत्ति कहीं भी, कभी भी प्रकट हो जाती है आदि-आदि

### कंजूस-वृत्ति का दाता-वृत्ति में परिवर्तन

प्यारे बाबा के महावाक्यों में कहा गया है, वृत्ति द्वारा वृत्ति का परिवर्तन करो। यदि किसी के पांव में कांटा चुभा हो, तो उसे निकालने के लिए एक अन्य कांटे को उससे थोड़ा गहरा चुभाना पड़ता है। फिर वह नया कांटा उस पुराने चुभे हुए को अपने साथ बाहर ले आता है। इसी प्रकार यदि कोई कंजूस-वृत्ति का है तो उसका परिवर्तन करने के लिए अपनी दाता-वृत्ति को उसकी कंजूस-वृत्ति से भी ज्यादा दृढ़ बनाकर उसका परिवर्तन कर सकते हैं। किसी में लोभ-वृत्ति है तो हम अपनी सन्तोष-वृत्ति को उससे भी ज्यादा दृढ़ बनाकर उसमें परिवर्तन ला सकते हैं।

### आकर्षण है दृढ़ता में

प्यारे बाबा अपने महावाक्यों में कहते हैं, यदि किसी में कोई अवगुण है तो आप उस अवगुण का चिन्तन मत करो बल्कि यह सोचो कि जैसे यह अपने अवगुण में दृढ़ है, मुझे भी अपने गुण में दृढ़ रहना है, जैसे यह दुख देने वाली वृत्ति में दृढ़ है, मुझे सुख देने वाली वृत्ति में दृढ़ रहना है। ऐसा करने से प्रारम्भिक फायदा तो यह होगा कि

उसकी जो वृत्ति हमें दुखी करने, हमारा समय बरबाद करने के निमित्त लग रही थी, वही अब गुण में दृढ़ करने के निमित्त लगने लगेगी। फिर दिल से निकलेगा, इसके अवगुण के कारण ही तो मैं अपने गुण में दृढ़ हुआ। आकर्षण दृढ़ता में है। यदि हम अपने कार्य में लम्बे समय से दृढ़ हैं तो दूसरे के आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। पलड़ा उधर ही झुकता है जिधर दृढ़ता है। अतः दूसरे की बुराई का चिन्तन करने में अपनी ऊर्जा का व्यय करने के बजाए उसी ऊर्जा को अपने गुण को दृढ़ करने में लगाया जाए तो इसका दीर्घकाल में फायदा यह निकलता है कि दूसरा भी अवगुण को छोड़ गुण की तरफ आकर्षित होता है।

### सकारात्मक दृढ़ता के

### परिणाम हमेशा अच्छे

एक बार एक सेवाकेन्द्र पर एक महिला ने आना शुरू किया। उसने बताया, मेरे पति ने शराब पीना और मांसाहार करना प्रारम्भ कर दिया है। मैंने बहुत समझाया, नहीं समझ सके। मैंने मन को दुखी करने की बजाय यह निर्णय लिया कि मैं भी प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान सीखने और धारण करने में अपना मन लगाऊँगी। यदि वे व्यसनों में दृढ़ हो रहे हैं तो मैं त्याग, दया, परोपकार में दृढ़ होती जाऊँगी।

जब उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश की तो मैंने स्पष्ट कह दिया, जैसे आप अखाद्य खाने में दृढ़ हैं, मैं भी अपने आध्यात्मिक मार्ग में दृढ़ हूँ। आप छोड़ दीजिए, मैं भी छोड़ दूंगी। कुछ समय बाद पति ने व्यसनों का मार्ग छोड़ पत्नी का साथ देना शुरू कर दिया। महिला ने अपनी सारी ऊर्जा को ज्ञान में दृढ़ होने में लगा दिया, उसी का यह सुखद परिणाम निकला। सकारात्मक दृढ़ता के परिणाम हमेशा अच्छे निकलते हैं, हाँ, कहीं कम समय में निकल आते हैं, कहीं थोड़ा समय ज्यादा भी लग सकता है।

वृत्ति मनसा वाचा कर्मणा तीनों स्तरों पर परिवर्तन करती है। हम अपने कर्म से दूसरे के कर्म को, वाणी से दूसरे की वाणी को और विचारों से दूसरे के विचारों को परिवर्तन कर सकते हैं।

### साधन आलीशान, मन गरीब

प्यारे ब्रह्मा बाबा बहुत उदारवृत्ति के थे। उनके प्रभाव से कई कंजूस-वृत्ति वाले भी उदार बन गए। इसलिए बाबा ने स्लोगन दिया, जैसे कर्म मैं करूँगा मुझे देख और करेंगे। कई बार हम देखते हैं, आधुनिक सुख-सुविधा के साधनों से भरपूर एक आलीशान इमारत में से निकल एक महिला सड़क पर खड़े रेहड़ी वाले से सब्जी का मोलभाव कर रही है। कुछ कीमत घटाने और तुलने के बाद कुछ और ऊपर से देने के लिए बहसबाजी कर रही है। सब्जी वाले के कुर्ते से तो

उसका बदन झांक रहा है और महिला के तन पर बहुत महंगा लिबास है परन्तु कीमत कम कराने की कवायद में वह उससे भी गरीब लग रही है। इसी प्रकार कई बार गरीब रिक्शा चालकों, आटोचालकों से भी रईसों को मात्र कुछ पैसे के लिए कहा-सुनी करते देखा होगा। नौकर से काम लेकर पैसे देने में जी चुराते, कम पैसे देते या आज कल करते देखा होगा। ये सब मानव की कंजूस-वृत्ति के कर्म हैं। ठीक है, व्यक्ति लुटाए नहीं पर अपने से कई गुणा गरीब व्यक्ति की थोड़ी-सी कमाई पर भी नज़र रखे या उसके मामूली से लाभ पर हाय-तौबा मचाए, यह भी तो शोभनीय नहीं।

ब्रह्मा बाबा जब बच्चों के साथ कराची में थे तो कर्पूर के दिनों में उनके स्नेही दुकानदार चुपके से सब्जी भिजवा दिया करते थे। बाबा ऐसे स्नेहियों को अक्सर कीमत से ज्यादा पैसे देकर उनके प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करते थे और सदा उनके स्नेह के पात्र बने रहते थे। बाबा की ऐसी उदार-वृत्ति से आज लाखों ब्रह्मावत्सों में भी उदारता की वृत्ति आई है।

### कर्मगति का ज्ञान भी, स्नेह भी

इसी प्रकार बाबा की वाणी से अनेकों की वाणी बदली। साकार बाबा जब आबू में थे तो स्टोव पर सुबह-सुबह चाय बनाई जाती थी। एक बार वह बिगड़ गया, आबू में कोई दुकान नहीं थी, जो उसे ठीक करवाया

जाए। प्यारे बाबा ने बड़ी दीदी को कहा, दिल्ली वाली पार्टी को यह स्टोव दे दो, ठीक कराकर आने वाली अगली पार्टी के साथ वापस भिजवा देंगे। दीदी अन्य यज्ञ-सेवा की व्यस्तता में स्टोव देना भूल गई। बाबा को समाचार मिला तो बाबा ने दीदी को कहा, यह छोटी भूल नहीं है, बच्चों को सुबह-सुबह चाय पीने की सुविधा मिलती थी, अब नहीं मिल पाएगी तो उनके संकल्प चलेंगे, वह सारा बोझा आप पर आएगा। यह सुन दीदी गम्भीर हो गई। जब बाबा ने उनका ऐसा चेहरा देखा तो स्नेहमूर्त होकर कहा, ड्रामा बना-बनाया है, उसमें कोई भूल होती है क्या, जो हुआ ड्रामानुसार, ऐसा कह बाबा ने बात को पूर्ण विराम लगा दिया। इस प्रकार बाबा बच्चों को कर्मों की गहन गति भी समझाते थे और स्नेह देकर हलका भी कर देते थे।

### नपी-तुली ज्ञान-युक्त,

### राजयुक्त वाणी

आमतौर पर व्यक्ति जब किसी की गलती पकड़कर उसे समझाता है तो ऐसे शब्दों का प्रयोग कर बैठता है कि सामने वाले के चेहरे पर उदासी छा जाती है, दिल धड़कने लगता है, शर्मसार भी हो जाता है। समझाने वाला इसे अपनी जीत मानता है और अनेकों को बताता है कि मैंने इस तरह से उसे उसकी गलती बताई कि वह ज़मीन में गड़ गया। परन्तु प्यारे बाबा कर्म की गुह्य गति का ज्ञान देकर

गलती की महसूसता भी कराते थे और फिर तुरन्त ड्रामा का ज्ञान देकर सामने वाले को नकारात्मक फीलिंग से मुक्त भी कर देते थे। बाबा की ऐसी नपी-तुली ज्ञानयुक्त, राजयुक्त वाणी से भी लाखों ब्रह्मावत्स अपनी वाणी में सुधार लाए हैं।

### जैसी वृत्ति वैसे प्रकम्पन

जैसी हमारी वृत्ति होती है उसी प्रकार के प्रकम्पन हमारे चारों ओर घेरा बना लेते हैं। यदि आत्म-अभिमानि वृत्ति है तो हमारे चारों ओर इसी प्रकार के प्रकम्पन फैल जाएंगे। यदि कोई देह अभिमानि व्यक्ति हमारे प्रकम्पनों के सम्पर्क में आएगा तो उसका भी देहभान टूट जाएगा, वह आत्म-स्वरूप की ओर उन्मुख होगा। वाणी या प्रवचन द्वारा किसी को आत्म-अभिमानि बनाने में समय और मेहनत लगती है फिर भी अपेक्षित परिणाम नहीं निकलते। जैसे बीमार व्यक्ति को हम गोली (टेबलेट) खिलाते हैं पर कई बार वह खाने में आनाकानी करता है, खा भी ले तो बाद में उल्टी भी कर देता है जिससे शरीर में अपेक्षित दवा नहीं पहुँच पाती। पर इन्जेक्शन के द्वारा वही दवा बड़ी सरलता से मरीज के खून में पहुँचा दी जाती है। टेबलेट खाने में जो बाधाएं आ रही थीं, इन्जेक्शन लगाने में उनमें से एक भी नहीं आई।

इसी प्रकार वाणी द्वारा हम जो सन्देश देते हैं उसमें समय की सीमा

रहती है, स्थान की सीमा रहती है, भाषा तथा संस्कृति की बाधा आती है, धन को तथा कनेक्शन, रिलेशन को भी देखना पड़ता है पर वृत्ति द्वारा वृत्ति का परिवर्तन करने में इनमें से कोई बाधा नहीं आती। हज़ारों मील दूर बैठे व्यक्ति की वृत्ति को भी हम यहाँ रहकर प्रभावित कर सकते हैं। उसके विचारों को परिवर्तन कर सकते हैं। उसमें ईश्वरीय प्रेम जगा सकते हैं। उसके मन में विकारों के प्रति वैराग्य

पैदा कर सकते हैं। इसलिए प्यारे बाबा ने हम सबको यह गृहकार्य दिया है कि 'आजकल के हिसाब से सुनने सुनाने की शक्ति के बजाय वृत्ति द्वारा वृत्तियाँ बदलने की आवश्यकता है।' हम इस पर प्रयोग करें, प्रयोगों की सफलता से एक-दो को अवगत कराएँ ताकि सभी वृत्ति द्वारा वृत्ति परिवर्तन की सेवा में लग जाएँ।

— ब्र.कु. आत्म प्रकाश

## घर बैठे मिली रजिस्ट्री

ब्रह्माकुमारी वन्दना चौहान, खानपुर, दिल्ली

मैं बचपन से ही भक्तिन थी, बहुत व्रत, पूजा, पाठ आदि करती थी। धीरे-धीरे समय बीता और मेरी शादी हो गई। शादी के साढ़े नौ साल बाद मेरे पति ने शरीर छोड़ दिया। उस समय मेरे दो छोटे-छोटे (चार और पांच साल आयु) पुत्र थे। मुझे ऐसे लगा जैसे कि मेरे ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। जिन्दगी रुक-सी गई। तभी अचानक मेरे गाँव की एक बहन ने मुझे शिवबाबा के ज्ञान के बारे में बताया। पहले तो मुझे यकीन नहीं हुआ लेकिन धीरे-धीरे बाबा के साथ के अनुभव होने लगे। मेरी हर मुश्किल में बाबा एक दोस्त, पति, हमदर्द की तरह साथ देने लगे। वो दिन और आज का दिन, फिर मैंने अपने दुखों की ओर मुड़कर नहीं देखा। अब मैं बाबा की मदद से अनेक दुखी आत्माओं को बाबा का परिचय देकर सुख का रास्ता बताती हूँ।

बाबा का एक अनोखा चमत्कार आप सभी को बताना चाहती हूँ। मेरी 60 लाख की जमीन की रजिस्ट्री चोरी हो गई थी और मुझे पता ही नहीं था। तीन साल बाद एक दिन अचानक एक व्यक्ति मेरे पास आया और बोला कि यह आपकी रजिस्ट्री है, मेरा मन नहीं माना इसलिए आपकी रजिस्ट्री वापस देने आया हूँ। उस समय मैं बाबा की याद में बैठी थी। विचार कीजिए, यह प्यारे बाबा का ही तो चमत्कार है, जो 60 लाख की रजिस्ट्री घर बैठे मुझे दे दी गई। आज के ज़माने में कौन ऐसा करता है। वाह बाबा, वाह! आपने कमाल कर दिया। शुक्रिया बाबा, शुक्रिया। ❖

## प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ...

— सम्पादक



**प्रश्न:-** आगे बढ़ने के लिए संगमयुग का पुरुषार्थ क्या है?

**उत्तर:-** कोई किसी की शिकायत करता है तो मैं सुनती नहीं हूँ। उनको भी पता है, यह सुनेगी नहीं। मैं कहूँगी, उसकी विशेषता देखो। तो यह अभ्यास करके निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति बनाना समझदार का काम है। पुरुषार्थ क्या है? सच्चा रहना, हलका रहना, मीठा रहना। सच्चा और हलका माना कोई बोझ नहीं। मैं किसी के लिए बोझ हूँ या मेरे ऊपर कुछ बोझ है तो हलकेपन का अनुभव नहीं होगा। अभी अच्छा करेंगे तो कल अच्छा ही होगा, ड्रामा में नूँधा हुआ है, कराने वाला बाबा बैठा है। कोई भी काम एक्कूरेंट होता रहे तो बेफिकर बादशाह हैं। हाँ, मेरी स्थिति ऐसी हो जो आज भी बाबा देखे तो मुझे प्यार करे। सभी ईश्वरीय परिवार वालों से प्यार पाऊँ, यह फिकर हो। तो ऐसी स्थिति बनानी है, नहीं बनी है तो दिन-रात यही काम करो। यह लगन से होगा। जहाँ थोड़ा

भी लगाव होगा, सफलता नहीं होगी। न मैं किसकी शिकायत करूँ, न मेरी कोई शिकायत करे, यह स्थिति हो।

**प्रश्न:-** मतभेद क्यों होता है?

**उत्तर:-** सच्चाई एकता में ले आती है। थोड़ा भी भेदभाव या मतभेद है तो सच्चाई नहीं है। तो सच्चाई से एकता में आ जायें। एकता के लिए समझें कि जब हम एक बाप के बच्चे बहन-भाई हैं, तेरा-मेरा नहीं है। मैं पदमापदम भाग्यशाली हूँ, जो मेरे को न कोई सेन्टर है, न कोई ज़ोन है, न कोई स्टुडेन्ट है, फ्री हूँ। मैं टीचर भी नहीं हूँ। बाप, शिक्षक, सतगुरु वह है। पहले बाप का सच्चा बच्चा बनूँ। सच्चा माना पक्का, कभी संशय न आए। निश्चयबुद्धि विजयन्ती। यह क्यों हुआ, क्या हुआ.. कोई क्वेश्चन नहीं। ऐसे निश्चयबुद्धि, सच्ची भावना वाले पुरुषार्थी मनमत, परमत के प्रभाव, दबाव से मुक्त रहते हैं। श्रीमत बंधनमुक्त, जीवनमुक्त बना देती है। श्रीमत वन्दरफुल है। श्रीमत से योगी फिर सहयोगी।

**प्रश्न:-** बाबा किन बच्चों पर कुर्बान जाता है?

**उत्तर:-** किसी की कोई भी समस्या हो, उसका समाधान हमारी उपस्थिति से हो जाए। समस्या भारी कर देती है, समाधान हलका कर देता है। ऐसी स्थिति बनाने की लगन हो। ऐसे बच्चों पर बाबा कुर्बान जाता है। उन्हें बाबा से बहुत अच्छी फीलिंग आयेगी। भले सभा में सुना रहा होगा पर ऐसे लगेगा मुझसे पर्सनल बात कर रहा है। एक भी शब्द मिस नहीं होगा।

**प्रश्न:-** रूहानी शक्ति जमा करने का तरीका क्या है?

**उत्तर:-** मेरा जी चाहता है, शान्त रहूँ, शान्ति से काम लूँ। बाबा से प्यार और शक्ति जो मिली है वह काम कर रही है। बाबा के प्यार में शक्ति है। बाबा का समझदार बच्चा वो जो प्यार और शक्ति से काम ले, इस दुनिया की आवाज़ों से पार रहे। दुःखधाम से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, दुःखधाम हमारे लिये खत्म हो गया। शान्तिधाम से सुखधाम फिर शान्तिधाम... यह



रिहर्सल करते रहो। कभी भी कोई भी बात का ज़रा भी दुःख महसूस हुआ तो शान्तिधाम की शान्ति अन्दर काम नहीं करेगी इसलिए न दुःख लेना, न दुःख देना। अगर दुःख लेंगे तो फिर वही देंगे भी। आवाज़ में वो प्यार और शक्ति नहीं रहेगी। कुछ भी हो जाये, दुःख न हो। बाबा के प्यार की शक्ति आज तक काम में आ रही है। एक बाबा से ही प्यार करें तो शक्ति जमा होती है, काम आती है।

**प्रश्न:- आप अपनी आत्म-अभिमानि स्थिति का अनुभव सुनाइये?**

**उत्तर:-** वृद्ध होते हैं तो स्मरण शक्ति कम हो जाती है, मेरी तो स्मरण शक्ति अच्छी हो गई है। भाषण नहीं कर सकती हूँ। मैं लेखक भी नहीं हूँ पर हिम्मत बहुत है। इसमें मदद भगवान की है। पहले हिम्मत हमारी फिर मदद उसकी। मुझे शरीर से न्यारा, प्रभु का प्यारा बनने में शक्ति बहुत मिली है। शरीर के जो सम्बन्धी हैं ना, कोई भान नहीं है। न उनको भान है, यह हमारी बहन है या...। इसको कहा जाता है आत्म-अभिमानि। ब्रह्मा बाबा के द्वारा जब मैं सुनती थी तो मैं नोट्स नहीं लेती थी, ध्यान से सुनती थी, फिर अनुभूति से शक्ति मिलती गयी। जीवन की सच्चाई क्या है, वो बात पक्की हुई और रूहानी जीवन-यात्रा शुरू हो गयी। कोई बात मुश्किल नहीं। सोचने

से मुश्किल है, सोचने से छोटी बात बड़ी हो जाती है, फिर मुरझाना शुरू हो जाता है। परन्तु हमको भगवान ने सिखाया है, बड़ी बात भी छोटी कर दो। कुछ नहीं है, नहीं सुनो। कुछ नहीं है, यह अभ्यास चाहिए। तो कमाल है आत्म-अभिमानि रहने की।

**प्रश्न:- आपके दिल में क्या है, आपके उद्गार जानना चाहते हैं?**

**उत्तर:-** अभी जी चाहता है, बाबा का हर बच्चा और बातों से मुक्त हो करके, हर समय, हर संकल्प में बाबा क्या कर रहा है, करा रहा है, यह प्रभु-लीला देखे। सेवा क्या है? प्रभु-लीला देखना। अहो प्रभु! आपकी लीला...। हे भगवन्! आप मेरे भाग्यविधाता हो! मैं क्या बताऊँ, किन शब्दों में बताऊँ...। बस, जी चाहता है, बाबा, आपके लव में लीन हुई रहूँ। थैक्यू बाबा, थैक्यू मेरा ईश्वरीय परिवार। जी चाहता है, बाबा जो इतने उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ा रहा है, सब मेरे भाई-बहनें ऐसे उड़ते रहें क्योंकि अभी चढ़ती कला का समय भी पूरा हुआ, अभी उड़ने की घड़ी है ना, इसलिए उड़ते रहो, उड़ाते रहो।

**प्रश्न:- दवा क्या है, दुआ क्या है?**

**उत्तर:-** स्व-चिंतन करना, यह दवा है। सबके लिये शुभचिंतक रहना, यह दुआ है। मैंने देखा है, धीरज का बहुत महत्व है, जितना धीरज धरो तो मन स्वतः शान्त रहता है, धीरज मीठा

बनाता है। दिल में कोई बात नहीं, दिल साफ है तभी जीना अच्छा हो सकता है। भगवान ने जो सच्चाई सिखाई है उससे सब काम सहज हो जाते हैं। मैं कोई गुरु नहीं हूँ जो चले बनाऊँ, बाबा ने कोई चले नहीं बनाये हैं। परमात्मा मेरा बाप है, मेरा टीचर है, सतगुरु है। जैसे सिखाया है उस पर चलने से बहुत बल मिला है। सच्ची दिल पर साहेब राजी है इसलिए मेरे से कोई गलत काम हो नहीं सकता। मेरा साहेब मेरे ऊपर राजी रहे, जब यह लक्ष्य है तो ऐसे लक्षण आते हैं।

**प्रश्न:- भाग्यवान की निशानी क्या होगी?**

**उत्तर:-** बार-बार श्वासों-श्वास अभ्यास चलता रहे कि मैं आत्मा हूँ। मैं आत्मा हूँ तो बाबा की हूँ। पहला पाठ, मैं आत्मा हूँ, दूसरा पाठ, मैं बाबा की हूँ। दोनों का सम्बन्ध है। चेक करना है, ऐसी याददाश्त है? याद मेरी स्वाभाविक है या करनी पड़ती है? भाग्यवान वो जिसको किसी का अवगुण न दिखाई दे। यह अपना रिकार्ड हो। चार्ट है योग का, रिकार्ड है सम्बन्ध में आते हुए गुणग्राही बनकर रहना क्योंकि अभी मुझे सर्वगुण सम्पन्न बनना है। बाबा कहे, जो ईश्वर के गुण हैं, वर्से में ले लो। बाबा ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। बाबा सागर है तो तुम उसका स्वरूप बन जाओ। ❖



## ‘पत्र’ संपादक के नाम

सितम्बर, 2013 अंक में ‘राजनीतिज्ञों का सम्मान क्यों?’ लेख से लेखिका बहन ने बहुत पाठकों का मनोमालिन्य धो डाला। प्रायः लोग अपने को दूध का धोया समझते हैं और राजनीतिज्ञों को बहुत पतित समझते हैं, यह मापदंड सत्य नहीं है। वे भी मनुष्य ही हैं। क्या उन्हें राखी के पावन धागे की आवश्यकता अनुशासित व नियन्त्रित नहीं कर सकती? क्या वे एक वृहद् परिवार के सदस्य नहीं? लेखिका ने बहुत ही सटीक ढंग की प्रस्तुति से सही विश्लेषण किया है।

— शम्भूप्रसाद शर्मा,  
सोडाला, जयपुर

जुलाई, 2013 अंक हाथ में आया, मन प्रफुल्लित हुआ। लेख ‘भगवान आ चुके हैं’, ‘पीछा करता है कर्मफल’, ‘निर्णय आपका’, ‘सकारात्मक विचार’ बहुत ही अच्छे और प्रेरणादायी हैं जो अज्ञान अंधकार को दूर कर ज्ञान की ज्योत जलाते हैं व भटकों को सच की राह दिखाते हैं।

— ब्र.कु. मनोहर,  
वारसिवनी (म.प्र.)

अगस्त, 2013 अंक में ‘बीती को भुलाइये’ और ‘आखिर कब तक

सहन करें’ ये लेख बहुत उद्देश्यपरक हैं। इनमें जीवन जीने की नई ऊर्जा भरी है। मैं इनसे बहुत प्रभावित हूँ। आज भारतीय संस्कृति, संस्कार, सभ्यता लोप हो रहे हैं। इस के लिए पत्रिका प्रति माह लेख दे तो बहुत श्रेष्ठ रहेगा। लोगों का नैतिक पतन चरम सीमा पर है। आचार संहिता वाली मानवता सबसे बड़ा धर्म है। अगर दिल की आवाज सुनकर चलें तो किसी अदालत या पंचायत की जरूरत नहीं होगी। निवेदन है कि गौमाता को हर पत्रिका में स्थान देकर हर तरह बचाने में सहयोग करें।

— ब्रह्माकुमार शामलाल,  
बाकरा रोड (जालोर), राजस्थान

सितम्बर, 2013 का ज्ञानामृत प्रेरणादायी तथा ज्ञानवर्धक है। जीवन परिवर्तन की प्रेरणा दी, ‘बाबा ने निर्व्यसनी और निर्विकारी बनाया’ लेख ने। ‘तनाव मुक्त जीवन की युक्ति’ लेख ने तो जैसे तनाव का अंत ही कर डाला। संपादकीय तो अनूठा ही रहता है। दादी जानकी के गुह्य उत्तरों से मन गद्गद् हो गया।

— ब्रह्माकुमार मकरध्वज,  
सारंगढ (छ.ग.)

ज्ञानामृत में प्रकाशित लेख सचमुच ज्ञान का स्रोत हैं। ये भाई-

बहनों के अथक परिश्रम तथा ज्ञान-दान की भावना के ही परिणाम हैं। उनके हम आभारी हैं। जून, 2013 अंक में प्रकाशित लेख ‘आखिर संगठन की आवश्यकता क्यों?’ बहुत शिक्षाप्रद है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ गुण तो अवश्य ही होते हैं। यदि हम एक-दूसरे से गुणों का आदान-प्रदान करें तो संगठन का लाभ पा सकते हैं।

— ब्रह्माकुमार सुदर्शन मेहता,  
मालवीय नगर, नई दिल्ली

ज्ञानामृत के प्रत्येक अंक में पहले पेज पर ‘संजय की कलम से’ लेख पढ़ता था तो यादगार शास्त्र महाभारत का संजय याद आ जाता था और सोचता था कि आखिर यह संजय कौन है, जो इतने गुह्य ज्ञानयुक्त लेख हर बार लिखता है। एक बार ज्ञानामृत के एक लेख में पढ़ा कि ज्ञानयज्ञ के बेहद सेवाधारी प्रिय जगदीश भाई (‘ज्ञानामृत’ के प्रथम मुख्य सम्पादक) को प्यारे बाबा ने यह अलौकिक उपाधि दी थी। तब समझ में आया कि जैसे महाभारत में संजय अन्धे धृतराष्ट्र को दिव्य दृष्टि द्वारा गुह्य राज समझाता था उसी प्रकार जगदीश भाई भी बाबा के ज्ञान की गुह्य बातों को बहुत सहज रीति से लिखते और सुनाते थे। धन्य हैं जगदीश भाई जिनके परिवर्तनकारी लेख आज भी ज्ञानामृत के प्रथम पृष्ठ पर स्थान पाते हैं।

— ब्र.कु. विनोद, जयपुर

# ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत - 2

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले मास के ज्ञानामृत में इसी विषय पर लिखे लेख के प्रारंभ में मैंने लिखा था कि ईश्वरीय ज्ञान के चार विषयों के साथ-साथ पाँचवाँ विषय 'व्यवस्था (Management)' भी बहुत ज़रूरी है।

शास्त्रों में लिखा है कि हरेक आत्मा को चार आश्रमों से गुजरना पड़ता है - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। मनुस्मृति में लिखा है कि सबको इन चार आश्रमों से गुजरना नहीं पड़ता, कई ऐसे भी तीव्र पुरुषार्थी हैं जो सीधे ही ब्रह्मचर्य से संन्यास आश्रम पहुँच सकते हैं। इसी तरह हमारे दैवी परिवार से भी कई ऐसे भाई-बहनें होंगे जो ऊपर लिखे चारों विषयों में ऐसा श्रेष्ठ पुरुषार्थ करेंगे जो उन्हें व्यवस्था रूपी पाँचवें विषय पर ध्यान देना नहीं पड़ेगा। परंतु जो इतने तीव्र पुरुषार्थी नहीं होंगे उन्हें आगे बढ़ने में, राज्य अधिकारी बनने में व्यवस्था शक्ति के अनुभव की ज़रूरत पड़ेगी।

जब भारत आज़ाद हुआ तब भारत में वायसराय के रूप में लार्ड माउंटबेटन थे और प्रधानमंत्री के रूप में जवाहर लाल नेहरू थे। भारत आज़ाद होने के समय अनेक प्रकार के दंगे हुए जिनमें हज़ारों लोग मर गये

जिसके लिए कहने में आता है कि खून की नदियाँ बहने लगीं। इसके समाचार दिल्ली की केन्द्रीय सरकार के पास पहुँचे। सरकार ने दंगों को रोकने की बहुत कोशिश की पर सफलता नहीं मिली। रविवार के दिन पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मंत्रीमंडल की आपातकालीन बैठक बुलाई जिसमें हो रहे दंगों की स्थिति पर विचार-विमर्श हुआ और यह समाचार सब जगह से मिला कि पुलिसकर्मी भी स्थिति को नियंत्रित करने में असफल रहे हैं। इसलिए मंत्रीमण्डल ने यह फैसला किया कि सब मिलकर लार्ड माउंटबेटन से अनुरोध करें कि वे सत्ता के सूत्र अपने हाथ में लेकर स्थिति को नियंत्रित करें और उसी दिन दोपहर 4 बजे मंत्रीमण्डल के सभी सदस्य लार्ड माउंटबेटन के पास पहुँचे और उनके हाथों में सत्ता के सूत्र देने का पत्र दिया।

पत्र पढ़कर माउंटबेटन ने कहा कि अब तो आप आज़ाद हो गये हो, आपके ही हाथों में सत्ता है। मैं तो यहाँ थोड़े दिन ही हूँ, आप ही इसे नियंत्रित करो। तब नेहरू जी ने कहा कि हम इस परिस्थिति को नियंत्रण में नहीं कर पा रहे हैं इसलिए आपके पास आये हैं। माउंटबेटन ने कहा कि आप क्यों

नहीं कर सके। तब नेहरू ने कहा कि हमें इस प्रकार की स्थिति को नियंत्रित करने का अनुभव नहीं है। आपने दूसरे विश्वयुद्ध के समय जापान के विरुद्ध सभी देशों की सेनाओं की अध्यक्षता की थी। इसलिए आपको इसका अनुभव है। तब माउंटबेटन ने कहा कि आप इतने समय से राजनीति में सक्रिय हैं तो आपको तो अवश्य ही इसका ज्ञान होगा। नेहरू जी ने जवाब दिया कि हम तो सत्याग्रह द्वारा भारत को आज़ाद कराने के काम में व्यस्त रहे, हमें राजव्यवस्था चलाने का अनुभव नहीं है इसलिए सत्ता के सूत्र आप संभालकर स्थिति को नियंत्रण में करें। माउंटबेटन ने सत्ता के सूत्र अपने हाथ में लेकर बहुत कम समय में दंगों को खत्म किया।

यही बात हम पर लागू होती है। सतयुग की शुरुआत के बाद अगर परमात्मा मेरे जैसे बिना अनुभव के व्यक्ति को कहे कि जाओ बच्चे, आप विश्व राज्य कारोबार संभालो तब मेरे जैसा व्यक्ति जवाब देगा कि बाबा, मुझे तो इसका अनुभव नहीं है। बाबा कहेगा कि आपने तो ज्ञान, योग, सेवा सब किया है। तो मेरा जवाब होगा कि बाबा, जो शक्ति मिली, वह माया से युद्ध करने और स्व-परिवर्तन में ही

लग गई इसलिए हमें राज्य-व्यवस्था करने का अनुभव नहीं है।

यहाँ पर दादी जानकी जी की बात आती है। जब ब्रह्मा बाबा दादी जानकी को मधुबन से ईश्वरीय सेवा में भेजना चाहते थे तो दादी जानकी ने मना किया कि बाबा, मैं तो आपके पास ही रहूँगी तब ब्रह्मा बाबा ने उन्हें कहा था कि मैं दूसरी जानकी कहाँ से लाऊँगा।

इसी प्रकार से जब मैं बाबा को कहूँगा कि बाबा, मैं विश्व का राज्य कारोबार नहीं संभाल सकता तो शिव बाबा भी कहेगा कि आप नहीं संभालेंगे तो मैं आप जैसा बच्चा कहाँ से लाऊँगा।

इस प्रकार विश्व राज्य व्यवस्था के कारोबार में हम असफल ना हो जायें। हमें शिवबाबा राज्य कारोबार देना चाहे तो हम हिम्मत से कार्यभार उठाने के लिए आगे बढ़ें इसलिए राज्य कारोबार के लिए व्यवस्था शक्ति का निर्माण तथा अनुभव और उसे आगे बढ़ाने की ज़रूरत है।

व्यवस्था शक्ति के अनुभव के आधार पर ही ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि, दीदी मनमोहिनी, दादी जानकी आदि को निमित्त बनाया और उन्होंने ही यज्ञ का मधुबन से सुचारू रूप से संचालन किया। इसलिए व्यवस्था शक्ति का अनुभव होना ही चाहिए। शास्त्रों में दो तरह के ऋषियों

का वर्णन आता है – ब्रह्मऋषि और राजऋषि। ब्रह्मऋषि जो बनते हैं, वे तपस्या करते हैं और समाज कल्याण की बातें करते हैं जबकि राजऋषि राज्य कारोबार का काम करते हैं। इस प्रकार से कार्यभेद और ज़िम्मेवारी के भेद के कारण ही हममें से कई आत्मायें ब्रह्मऋषि बन सकते हैं और कई राजऋषि बन सकेंगे। राजऋषि बनने के लिए राजकारोबार संभालने की व्यवस्था का ज्ञान ज़रूरी है और इसी संदर्भ में शास्त्रों में भी कहानी है कि जब कोई राजा अध्वमेध यज्ञ करता था और चारों दिशाओं में अपने विजय का झंडा लहराकर वापस आता था तो यज्ञ की समाप्ति के बाद उसके मुख से निकलता था 'अदण्डो अहम्' अर्थात् मेरे ऊपर कोई नहीं है, मैं सबसे ऊपर हूँ, मुझे कोई दंड नहीं दे सकता। उसी समय पर राजा के गुरु जो ब्रह्मऋषि होते थे, वे खड़े होकर तीन बार कहते थे – 'धर्मेन दण्डो' अर्थात् धर्म तुमको दण्ड दे सकता है।

शास्त्रों में वर्णन आता है कि गुरु वशिष्ठ और गुरु विश्वामित्र के बीच राजऋषि और ब्रह्मऋषि को लेकर विवाद था। एक रात को गुरु विश्वामित्र गुरु वशिष्ठ का वध करने के लिए उनके आश्रम में तलवार लेकर पहुँचे। कुटिया के अंदर गुरु वशिष्ठ और माता अरूंधती के बीच

हो रहे संवाद को उन्होंने सुना। वशिष्ठ ने अरूंधती को कहा कि हमारे गुरु विश्वामित्र स्वभाव से बहुत क्रोधी हैं। अगर वे अपने स्वभाव पर जीत पा लें तो मैं उन्हें ज़रूर ब्रह्मऋषि कहूँगा। बाकी सब बातों में वे संपूर्ण हैं।

यह सुनकर विश्वामित्र कुटिया के अंदर गये और तलवार को बाजू में रखकर उनके पाँवों में गिर गये और कहने लगे कि मुझे माफ कर दो। तब वशिष्ठ जी के मुख से निकला, ब्रह्मऋषि विश्वामित्र उठो, आपका स्थान मेरे पाँवों में नहीं परंतु मेरे दिल में है। इस प्रकार से राजऋषि और ब्रह्मऋषि के बीच के अनेक प्रसंग शास्त्रों में हैं। हमें हमारा भविष्य निश्चित करना है। क्या हम ब्रह्मऋषि बनना चाहते हैं या राजऋषि?

महाभारत में भी ऐसा लिखा है कि भीष्म को कहा गया कि धृतराष्ट्र की यह विचारधारा गलत है तो भीष्म ने कहा कि राजा भगवान का स्वरूप होता है इसलिए मैं मानता हूँ कि राजा का आदेश भगवान का आदेश है इसलिए मैं उनके आदेश का पालन करूँगा। इस प्रकार से राजा को भगवान का स्वरूप मानकर भीष्म पितामह ने सारी जिन्दगी कौरवों के पक्ष में रहकर कार्य किया और श्रीकृष्ण का भी पूरा सम्मान किया परंतु फिर भी राजा के प्रति अपनी निष्ठा के कारण वे अंत तक कौरवों

अर्थात् राजा के साथ ही रहे। इस प्रकार की उस ज़माने में लोगों की धारणा थी।

शास्त्रों में लिखी कहानियों के विस्तार में जायें तो बहुत सी बातें मिल जायेंगी कि राजकारोबार कैसे होता था, समाज व्यवस्था का कार्य ब्राह्मणों द्वारा कैसे किया जाता था।

शिवबाबा ने भी सतयुगी दुनिया की वर्ग व्यवस्था के बारे में थोड़ा बहुत बताया है जैसे कि कलियुग में लोग तमोप्रधान, द्वापर में रजोप्रधान, त्रेतायुग में सतो और सतयुग में सतोप्रधान होते हैं। पहले ज़माने में जब राजा को तीन-चार राजकुमार होते थे तो वे युवराज चुनने के लिए उनकी परीक्षा लेते थे। इसी प्रकार शिवबाबा भी अंत में परीक्षा लेंगे। बाबा ने मुरली में बताया है कि अंतिम समय की परीक्षा एक सेकंड की होगी और उस परीक्षा में जो पास होंगे, वे बिन्दीधारी बनेंगे अर्थात् सतयुगी राजकारोबार संभालेंगे और जो फेल होंगे वे चिन्दीधारी अर्थात् त्रेतायुगी राजकारोबार संभालेंगे। बाबा की यह मुरली जब मैंने सुनी, तब मैंने बाबा से पूछा, बिन्दी को तो हम जानते हैं पर यह चिन्दी क्या है? तब बाबा ने कहा कि कल्पवृक्ष का चित्र अच्छी तरह देखो, उसमें त्रेता की सीता के सिर पर चिन्दी है। बिन्दी और चिन्दी सतयुग-त्रेतायुग में फर्क करने के निमित्त

बनेंगी। अंतिम परीक्षा में पास होने के लिए बहुत समय के अभ्यास की ज़रूरत है। उस एक सेकंड की परीक्षा में वही सफलता प्राप्त कर सकेंगे जिन्हें ज्ञान, योग, धारणा के सिवाय कारोबार चलाने का भी बहुत अभ्यास होगा क्योंकि सतयुगी दुनिया में भी राजा को अपनी प्रजा को संभालना पड़ेगा। प्रजा के कल्याण के लिए अनेक प्रकार के कार्य करने होंगे। बाबा के ज्ञान के मुताबिक संगम पर ही हम ब्राह्मण बनते, ब्राह्मण से फरिश्ता, फिर देवता बनेंगे। जैसे मनुष्य माना मनु की संतान वैसे ही ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मा की संतान। इसलिए बाबा हम सब बच्चों को ब्राह्मण कहते हैं और यह वर्ग व्यवस्था वर्तमान दुनिया में भी चल रही है। वर्तमान समय भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्ग हैं। लौकिक दुनिया में ब्राह्मणों के भी कई वर्ग हैं –

1. ऋषि ब्राह्मण जो हिंदू धर्म के सर्वोच्च शिखर पर हैं।
2. राजा ब्राह्मण – जैसे कि कण्व वंश ब्राह्मण वंश था क्योंकि उसके आदि स्थापक कण्व ऋषि थे और इस वंश के राजाओं ने उस समय के पाटलिपुत्र पर राज्य किया था। महाराष्ट्र में जिन पेशवाओं ने राज्य किया, वे ब्राह्मण वंश के थे
3. आचार्य ब्राह्मण जिसमें शंकराचार्य, माधवाचार्य आदि

आचार्य ब्राह्मण होकर गये हैं और इन्हीं आचार्य ब्राह्मणों ने जैन धर्म के लिए भी दर्शन शास्त्र लिखे। एक हँसी की बात लिखता हूँ कि नास्तिक विचारधारा के आचार्य चारवाक भी आचार्य ब्राह्मण थे।

4. पंडित ब्राह्मण – वाचस्पति मिश्र तथा मंडनमिश्र जैसे हज़ारों की संख्या में पंडित ब्राह्मण हुए हैं।

5. मंत्री ब्राह्मण – ये ब्राह्मण राजाओं के पास दीवान या प्रधानमंत्री के रूप में काम करते थे जैसे चंद्रगुप्त मौर्य के समय में आचार्य चाणक्य हुए थे जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से चंद्रगुप्त को राजा बनाया और राजनीति पर विविध पुस्तकें लिखी हैं।

6. साहित्यकार ब्राह्मण – इसमें अनेक प्रकार के ऋषि जैसे कि वाल्मीकि, कालीदास आदि होकर गये जिन्होंने उत्कृष्ट साहित्य की रचना की।

7. कब्र खोदने वाले ब्राह्मण – इस प्रकार का ब्राह्मण संप्रदाय कई स्थानों पर है और खासकर मुस्लिम राजाओं के समय में इनकी वृद्धि हुई। जहाँ-जहाँ मुस्लिम राजाओं ने युद्ध किया, वहाँ उनके मुस्लिम साथियों को कब्र दाखिल करने के लिए ये साथ जाते थे।

8. नौकरी करने वाले ब्राह्मण – ये ब्राह्मण राजाओं के पास नौकरी करते थे। राजा इन्हें राजकारोबार के विविध विभागों के प्रमुख के रूप में

अपने पास रखते थे।

9. किसान ब्राह्मण – ये खेती का काम करने वाले ब्राह्मण हैं। शास्त्रों में कई जगह वर्णन आता है कि कई ब्राह्मण खेती करते थे और खेती के द्वारा खुद का अन्न पैदा करते थे। खेती के द्वारा अनेक प्रकार का कार्य होता था जिसमें सीता के जन्म की बात बहुत प्रसिद्ध है। सीता जनक राजा को हल चलाने के समय ज़मीन से मिली और अंत में भी सीता ज़मीन में ही समा गई।

10. भिक्षुक ब्राह्मण – ये भिक्षुक ब्राह्मण दक्षिणा लेकर कई तरह के कारोबार करते हैं जैसे कि शादियाँ कराने वाले, श्राद्ध कराने वाले, कथायें कराने वाले ब्राह्मण।

11. न्यायाधिकारी ब्राह्मण – ये ब्राह्मण न्यायाधिकारी बनकर कारोबार करते थे। मिसाल के तौर पर पेशवाओं के ज़माने में रामशास्त्री नामक प्रसिद्ध न्यायमूर्ति थे। राजायें राजकारोबार तथा युद्ध में व्यस्त रहते थे, न्याय का कारोबार न्यायाधिकारी ब्राह्मण ही करते थे।

इस प्रकार से वर्तमान समय ग्यारह प्रकार के ब्राह्मण हैं। इन सबमें हमारे दैवी ब्राह्मणों का भी नया पंथ लिखना चाहिए। दैवी ब्राह्मण अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा की मुख वंशावली अर्थात् परमात्मा ने जिन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा जन्म दिया। ऐसे दैवी कुल

के ब्राह्मण सिर्फ संगम पर ही होते हैं।

ब्राह्मण शब्द के विस्तार में इसलिए जाना पड़ा क्योंकि यज्ञ में इसी प्रकार से कारोबार का विभाजन हुआ है। यज्ञ की स्थापना से लेकर 1969 तक राज्य कारोबार अर्थात् विश्व विद्यालय का संचालन और परमात्मा के अवतरण द्वारा ईश्वरीय ज्ञान देने का कारोबार ब्रह्मा बाबा एक के ही हाथ में था। बाद में ज़िम्मेवारी का विभाजन हुआ और दादी प्रकाशमणि, दीदी मनमोहिनी आदि यज्ञ की व्यवस्था का कारोबार करने लगे और गुलजार दादी द्वारा परमात्मा के दिव्य अवतरण तथा ज्ञान देने का कार्य होने लगा। सृष्टि रूपी रंगमंच पर भी शुरू में ब्रह्मऋषि और राजऋषि दोनों का स्वरूप एक ही होगा। जैसे विष्णु लक्ष्मी-नारायण के युगल रूप का यादगार है। इसी प्रकार सतयुग में राजऋषि तथा ब्रह्मऋषि दोनों का कार्य एक के ही द्वारा होगा। बाद में कार्य के आधार पर विभाजन हुआ होगा। ज्ञान देने का कार्य ब्रह्मऋषि तथा राज कारोबार करने का कार्य राजऋषि अर्थात् महाराजाओं ने संभाला होगा। गौतम बुद्ध, महावीर, मोजेस ये राजपरिवार के थे। राजपरिवार में जन्म लेकर ही ये राजऋषि से ब्रह्मऋषि बने। इसी विषय पर आगे चर्चा करेंगे। ❖

## ज्ञान सरोवर में आठ डुबकियाँ

अमृतलाल मदान, कैथल

अहा! आबू का दृश्य सुहाना,  
देव-देवियाँ ये कहाँ से आईं।  
हरित के बीच श्वेत का बाना,  
दिव्य पावनता पग-पग पर छाई।

पर्वत भी ज्यों चकित देखते,  
बाबा की यह घोर तपस्या।  
हर रात हुई ज्यों पूनम की अब,  
पहले थी जो काल अमावस्या।

देख दादियाँ, देख दीदियाँ,  
जैसे हों ये स्वर्ग से उतरीं।  
बन गयी अब गगन बालाएँ,  
पहले थी जो पृथ्वी-पुत्री।

दूर उस पथ पर कौन जा रहे,  
निश्चित दिशा को ज्यों पा गये।  
बाबा-कक्ष ही लक्ष्य है उनका,  
मूक हो मौन में जा समा गये।

पंछी मधुर गीत सुनाते,  
कुहू-कुहू की तान लगाते।  
वो भी सुन-सुन 'ओम शान्ति',  
ओम्-ओम् की लय में गाते।

बादल बरसे, मौसम भीगा,  
तरल-तरल-सा हवा का आँचल।

पत्ता-पत्ता है मुसकाता,  
बाबा से ज्यों आशिष ले कर।

आँख में भर लूँ ये नज़ारे,  
दिव्य, पवित्र, प्यारे, न्यारे।  
क्या पता कल सपन में आकर,  
आबू मुझको पुनः पुकारे।

धन्यवाद बाबा, धन्यवाद आबू  
तुमने सिखाया इन्द्रियों पर काबू।  
राजयोग का सही अर्थ समझाया,  
जीवन में करूँगा उसे अब लागू।

# साथी बने हो तो बने रहना

● ब्रह्माकुमार विनोद, भुज-कच्छ (गुजरात)

**मे**रा लौकिक जन्म एक साधारण और भक्ति-भाव वाले परिवार में हुआ। जब मैं नौ साल का हुआ तो मुझे हॉस्टल में माँ-बाप से अलग रहना पड़ा। दो साल बाद पुनः घर आकर पढ़ाई करने लगा। उस समय घर में लाइट नहीं थी। पढ़ाई का कार्य सरकारी स्ट्रीट लाइट में होता था। जीवन में एक ही इच्छा थी भगवान को पाने की। इसलिए सभी देवी-देवताओं को भगवान मानकर याद करता था।

## अलौकिक जन्म

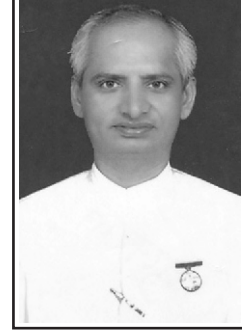
एक दिन मेरी लौकिक फूफी चम्पा माता मुझे कहने लगी, विनोद, तुम भगवान की खोज में हो, भगवान का परिचय तुम्हें ब्रह्माकुमारीज से मिलेगा। मेरे गाँव माधापर (कच्छ) से 5 किलोमीटर दूर भुज (कच्छ) में ईश्वरीय पाठशाला थी। मैं वहाँ सात दिन का कोर्स करने गया। तब मेरी उम्र 14 साल की थी। भगवान का परिचय पाकर मेरे रोमांच खड़े हो गये। सम्पूर्ण ज्ञान को बुद्धि स्वीकार करती गई। एक दिन मैं वहाँ गया तो टेपरिकार्डर में अव्यक्त बापदादा की आवाज़ सुनाई दी, बड़ी अच्छी लगी। पूछने पर बताया गया कि अब भी भगवान गुलजार दादी के तन में माउंट

आबू में, ओमशांति भवन में आते हैं। मैंने कहा, मुझे उनसे सम्मुख मिलना है, क्या मिल सकता हूँ? मुझे मन की शुद्धि के लिए कुछ धारणाएँ बताई गईं। मैंने उसी दिन से सब धारणाएँ पक्की कर लीं।

बाबा का बनने के बाद अनेक प्रकार के विघ्न आये। परिवार वालों से, शारीरिक बीमारियों से, प्रकृति से, सरकारी अधिकारियों से पर सब ही विघ्न अधिकाधिक अनुभवी बनाते गये।

## बापदादा से प्रथम मिलन

बापदादा से मिलने पहली बार मधुबन जाना हुआ। वो दिन मेरे जीवन का यादगार दिन था। ओमशांति भवन में 9 मई, 1983 को रात्रि साढ़े बारह बजे बाबा से मिलने स्टेज पर गया। उन दिनों बाबा एक-एक से हाथों में हाथ लेकर मिलते थे, वरदान देते थे। वह सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। बाबा बोले, बच्चे, सदा किसकी याद आती है? मैंने कहा, बाबा, आपकी। बाबा ने कहा, देखो, जब-जब दुख की लहरें आयें तो बाप को याद करना, सदा खुश रहना, बहुत होशियार हो, कमाल कर सकते हो, सदा आगे बढ़ते रहना। बाबा के दिये ये वरदान आज भी मुझे शक्ति देते हैं



और उमंग-उत्साह दिलाते हैं। कोई भी परीक्षा आने वाली होती है, उससे पहले ही बाबा की याद आ जाती है इसलिए दुख की फीलिंग नहीं आती है। बहुत सारे बाबा ने अनुभव कराये हैं जिनको याद करते हैं तो बाबा के प्रति प्यार के आँसू आ जाते हैं।

## बैज की कमाल

बाबा का बनने के ठीक एक साल बाद बैज लगाना शुरू किया। आज तक कभी बैज लगाना भूलता नहीं और इसी बैज ने कमाल की जो मुझे नौकरी दिलाई। सन् 1988 में एक इंटरव्यू कॉल आई। जिला भुज में छह स्वास्थ्य कर्मचारियों की ज़रूरत थी। लगभग 1500 विद्यार्थी इंटरव्यू देने आये थे। जब मेरी बारी आई, मैं अंदर गया। वहाँ 6 अधिकारी बैठे थे, इंटरव्यू लेकर नंबर देते थे। पहले तीन अधिकारियों ने प्रश्न पूछे, मुझे उत्तर भी आ गये। फिर चौथे अधिकारी की बारी आई और उनकी नज़र बैज पर

पड़ी। उन्होंने पूछा, यह क्या लगा रखा है? मैंने कहा, यह तो मेरे, आपके, सारे विश्व के पिता परमात्मा का चिन्ह है जिनको हम भगवान, ईश्वर, अल्लाह, गॉड फादर कहते हैं, आप नहीं जानते इनके बारे में? तो एक अधिकारी बोले, यह माउंट आबू की संस्था है। मैंने पूछा, सर, आप माउंट आबू गये हो? बहुत अच्छे शिविर वहाँ चलते हैं। इस प्रकार चर्चा चली। फिर एक अधिकारी बोले, देखो, यह नौकरी ऐसी है जो लोग गालियाँ भी देंगे (स्वास्थ्य विभाग की नौकरी ऐसी है)। मैंने कहा, सर, पत्थर तो नहीं मारेंगे? पत्थर मारने पर खून निकलता है, गालियों से नहीं। यह सुनकर वे खुश हो गये और मुझे बोले, अब जाओ घर। चार दिन के बाद मुझे नौकरी मिल गई। आज 22 साल से स्वास्थ्य विभाग की नौकरी कर रहा हूँ। ऐसे बैज ने कमाल की।

#### सद्भावना युवा साइकिल यात्रा

सन् 1993 में ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग द्वारा पूरे भारत में 8 स्थानों से 'भारत एकता युवा सद्भावना साइकिल यात्राएँ' निकाली गईं। मैंने इस यात्रा में जाने का फॉर्म भरा और मेरा चुनाव हो गया पोरबंदर से दिल्ली वाली यात्रा में। सरकार से उन दिनों छुट्टी नहीं मिल रही थी। हमारे अधिकारी ने मना कर दिया। परिवार वालों ने भी मना किया, कहने लगे,

40 दिन छुट्टी पर जायेगा, पगार नहीं मिलेगी, साइकिल भी नई लेनी पड़ेगी आदि-आदि। लेकिन जहाँ दृढ़ता होती है, वहाँ सफलता अवश्य होती है। जब यात्रा का समय नज़दीक आया तो मेरे अधिकारी ने कहा, विनोद, तुम यात्रा में जा सकते हो, तुम्हारी छुट्टी का पत्र गांधीनगर से आ गया है। यह साइकिल यात्रा युवा उत्थान का कार्य है। जो काम सरकार को करना चाहिए, वो काम आप करने जा रहे हो। इस प्रकार मुझे ऑन ड्यूटी छुट्टी मिली, पगार भी नहीं कटी। नई साइकिल भी बीएसए कंपनी वालों ने सेवार्थ फ्री दी। यह जानकर लौकिक परिवार वाले भी खुश हो गये। कहते हैं कि जहाँ चाह होती है, वहाँ राह मिल ही जाती है।

#### भाग्य देने वाले पैसे

सन् 1997 में मैं मेडिकल विंग मीटिंग में मधुबन (ज्ञान सरोवर) गया था। उस समय देवघर गांव में 150 रुपये प्रतिमाह किराये पर गाँव के पुजारी के मकान में रहता था। वह भी बाजू में ही रहता था। जब मैं मधुबन से वापस आया तो पुजारी जी ने बताया कि आप गये और दूसरे दिन चोरों ने अन्य पाँच मकानों के साथ आपके मकान का भी ताला तोड़ डाला। हम लोगों ने दूसरा ताला लगाया है, लो चाबी, आप खुद देख लो कि क्या गया है। मैंने ताला खोला तो सामने ही नया

टेपरिकार्डर पड़ा था। चोर लोगों ने एक बॉक्स में से आध्यात्मिक पुस्तकें निकाल कर खटिया पर रख दी थी और रूमाल में 1800 रुपये बंधे पड़े थे जो उन्होंने लिये नहीं। मैंने पुजारी जी को पूछा, ये पैसे? वह बोला, हमने कुछ नहीं खोला, नहीं देखा, सिर्फ ताला लगाया है। मुझे तुरंत याद आया, बाबा ने कहा है, बच्चे, चोर आपकी अलमारी तक आयेगे लेकिन उन्हें पैसे देखने में नहीं आयेगे। यह प्रैक्टिकल अनुभव हुआ। मैंने वे पैसे उठाये, उनमें से 150 रुपये पुजारी को किराया दिया। पुजारी जी ने वे पैसे माथे से लगाये और कहा, इनको हम रख देंगे अलमारी में, प्रयोग नहीं करेंगे, भाग्य देने वाले हैं आपके पैसे। इनसे हमारे पैसों की सुरक्षा हो जायेगी।

#### स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा

संगमयुग है असंभव को संभव करने का युग। दृढ़ता ही सफलता की चाबी है। यूथ विंग द्वारा सन् 2006 में भारत वर्ष में 31 युवा पदयात्राओं का आयोजन किया गया। इन यात्राओं द्वारा गाँव-गाँव की बहुत ही अच्छी सेवा होनी थी। इस यात्रा ने लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान प्राप्त किया। मैंने भी उस यात्रा में जाने हेतु फॉर्म भरा और चुना गया जलगांव से रायपुर वाली यात्रा के लिए।

इसके लिए दो मास पहले से ही



40 दिन के लिए छुट्टी मंजूर करवा ली थी। जैसे ही जाने की तिथि नज़दीक आई, विनाशकारी बारिश गुजरात में (सूरत में) आ गई। किसी-किसी जगह तो दो मंजिल तक पानी घुस गया था। सभी कर्मचारियों की छुट्टी नामंजूर कर दी गई। जो छुट्टी गये थे, उन्हें भी वापस बुला लिया गया। गवर्मेन्ट ने परिपत्र निकाला। सभी वर्तमान पत्रों में समाचार आ गया। मेरी छुट्टी भी रद्द कर दी गई।

#### बाबा ने बदला सरकारी परिपत्र

डीडीओ सर से मैंने कहा, सर, सूरत में पानी आया है। डूबे लोगों को, बीमार लोगों को निकालने की बात सही है लेकिन मैं भी इस यात्रा में उन युवाओं को निकालने जा रहा हूँ जो व्यसनो में, फैशन में, अंधश्रद्धा में फँसे हुए हैं। सर, मेरी जगह सूरत में अन्य कर्मचारी को भेजा जा सकता है लेकिन इस यात्रा में मेरे सिवा तुरंत अन्य कोई जा नहीं सकता, अब सिर्फ छह दिन बाकी हैं। सर, मैंने कभी छुट्टी नहीं ली है, मेरा रिकॉर्ड चेक करें। हर वर्ष ईश्वरीय आदेश अनुसार सिर्फ माउंट आबू की सेवाओं के लिए ही छुट्टी लेता हूँ। डीडीओ साहब ने सुना और तुरंत हमारे सीडीएचओ सर को कहा, विनोद की छुट्टी अभी-अभी मंजूर कर दो और इनकी जगह सूरत दूसरे को भेज दो। कमाल है प्यारे बाबा की

जो बच्चों के लिए गवर्मेन्ट के परिपत्र को भी बदल देते हैं।

#### भगवान ने मंजूर करवाई छुट्टी

जब मैं 40 दिन की सेवाएँ करके वापस आया तो डीडीओ साहब के पास गया। कुछ आध्यात्मिक पुस्तकें दी और धन्यवाद कहा। सर बोले, किस बात का धन्यवाद दे रहे हो? मैंने कहा, सेवा के लिए छुट्टी नहीं मिल रही थी, आपने दी और अच्छी सेवा करके वापस आ गया। तो डीडीओ सर ने कहा, देखो, इसमें धन्यवाद की बात नहीं है, मैं इतना सख्त हूँ कि किसको भी छुट्टी नहीं देता लेकिन मेरे मुख के द्वारा भगवान ने आपकी छुट्टी मंजूर करवाई है।

प्यारे बाबा ने जीवन में ऐसे अनुभव कराये हैं जिनको याद करते, बाबा से बातें करते कई बार आँखों में प्रेम के आँसू आ जाते हैं। दिल बार-बार गीत गाता है, किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें..ओ बाबा, आपने कमाल कर दिया। जीवन में चाहे कितनी भी समस्याएँ आयें, विघ्न आयें लेकिन अगर उमंग-उत्साह है, दृढ़ संकल्पधारी हैं तो सफलता अवश्य मिलती है। यह मैंने अनुभव किया।

#### आसन बिछा साथ

#### खिलाता हूँ बाबा को

संगमयुगी ब्रह्मावत्सों के प्रति यह चाहना है कि हमारा कुमार जीवन

सदा उमंग-उत्साह में रहे इसलिए हमें बाबा से, बाबा की सेवा से जिगरी प्यार हो, किसी को भी नहीं देखना है, किसी के अवगुणों को भी नहीं देखना है। मैं रोज़ बाबा के साथ का अनुभव हर कार्य में करता हूँ। सुबह बाबा 3 बजे जगाते हैं। खाना बनाते समय बाबा को कहता हूँ, चलो बाबा, हम खाना बनायें। बाबा को दोस्त बना लेता हूँ। खाना खाते दो आसन बिछाता हूँ और कहता हूँ, बाबा, चलो खाना खायें।

#### हर सतगुरुवार लिखता हूँ

#### पत्र बाबा को

नौकरी 20 किलोमीटर दूरी पर है। बाइक पर जाता हूँ। बाइक चालू करते बाबा को पीछे बिठाये बाबा के साथ में जाने का अनुभव करता हूँ। अमृतवेला भी मिस नहीं होता। खाना बनाकर, साथ लेकर मुरली क्लास में जाता हूँ। मुरली भी कभी मिस नहीं होती। सारा दिन बाबा के साथ का अनुभव होता है तो खुशी भी बनी रहती है। शेष रहे संगमयुग के समय में बाप समान बनने का लक्ष्य है। हफ्ते में एक बार सतगुरुवार को बाबा को पत्र लिखता हूँ और सारा समाचार बाबा को देता हूँ। बाबा को दिल से कहता हूँ, साथी बने हो तो बने रहना। ❖

मास्टर ज्ञान-सूर्य बन ज्ञान की लाइट-माइट देने वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं

# लाभकारी होती है कड़वी दवाई

**ज**ब हम बीमार होते हैं तो चिकित्सक कई बार ऐसी कड़वी दवाई पीने को कहते हैं जिसको देखते ही सारे शरीर में कंपकंपी-सी आ जाती है। पीने लगते हैं तो मुँह खुलने का नाम ही नहीं लेता और पहले से पेट में पड़ा अन्न भी बाहर आने जैसा होने लगता है। फिर भी ऐसी दवाई पीनी पड़ती है क्योंकि वह हितकारी है। आश्चर्य की बात यह है कि दवाई मीठी भी हो और हितकारी भी हो, ऐसा बहुत कम होता है। बात केवल दवाई की नहीं है, इलाज का कोई भी रूप हो – टांका, चीरा, आपरेशन सभी कष्टदाई होते हैं।

## मन का उपचार मन द्वारा

शारीरिक बीमारियों से भी ज्यादा घातक होती हैं मानसिक बीमारियाँ। मन की उलझनें, मन की दुविधाएँ, मानसिक टकराहटें, मानसिक वेदनाएँ, कर्मजन्य मनमुटाव और आपसी स्वभाव की टक्कर – ये सभी इसी श्रेणी में आते हैं। इन्हें मिटाने के लिए भी दवा की ज़रूरत होती है जो शारीरिक दवा से भी ज्यादा कष्टकारी लगती है। मन का उपचार मन द्वारा – इस कहावत के अनुसार सृष्टि ड्रामा में कई ऐसी स्थितियाँ बनती हैं, ऐसे मनुष्य हमारे सम्पर्क में आते हैं जो वास्तव में हमारी

मानसिक बीमारी का उपचार करने वाले होते हैं पर हम उन्हें पहचान नहीं पाते और कड़वी दवाई की तरह उनसे पीछा छुड़ाने की बात सोचते हैं। परिणाम यह निकलता है कि मानसिक बीमारी तो थी ही, ऊपर से ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति एक नई समस्या खड़ी हो जाने का एहसास कराने लगती है।

## संस्कार शमन का माध्यम

कई बार हम देखते हैं कि किसी परिवार में लम्बे समय से एक ही बहू है। उसी की घर में चलती है और उसकी हर अच्छी-बुरी बात को महत्त्व दिया जाता है। उसकी कमियों को नज़रअंदाज किया जाता है जिस कारण उसमें कुछ अनचाहे संस्कार भी पनप जाते हैं। अब उसी घर में एक छोटी बहू आ जाती है जिसमें अपने गुण हैं। वे गुण बड़ी बहू के गुणों से मेल खाते नहीं हैं वरन उसके विपरीत हैं। बड़ी बहू को छोटी बहू अपने एकछत्र राज्य के लिए चुनौती लगने लगती है। वह या तो तनाव-अवसाद में रहने लगती है या छोटी बहू को दबाने का प्रयास करती है। यदि बड़ों का पलड़ा छोटी की तरफ भारी है तो अपने को उपेक्षित महसूस करती है और कई प्रकार की शारीरिक-मानसिक परेशानियों का अनुभव

## ● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

करने लगती है। वास्तव में देखा जाए तो यह छोटी बहू चुनौती नहीं है बल्कि उसमें जो अनचाहे संस्कार पनप आए हैं उनका शमन करने का माध्यम बन रही है।

इस प्रकार की घटनाओं के समाचार अक्सर प्रकाशित होते रहते हैं। कुछ दिन पहले एक समाचार आया था कि एक 40 वर्ष की बहू ने ससुराल में आत्महत्या कर ली। कारण यह था कि पहले उसकी देवरानी घर से दूर रहती थी और उसे (बड़ी बहू को) सास-ससुर का भरपूर प्यार मिलता था, उसी की घर में चलती थी। परन्तु देवर का तबादला उसी शहर में होने से अब देवरानी भी घर में आ गई। सास-ससुर उसे ज्यादा प्यार और महत्त्व देने लगे। बड़ी बहू ने कुछ दिन तो इसे देखा, फिर असहनीय लगने लगा तो जीवनलीला समाप्त कर दी।

## प्यार देने वाले बन जाएं

देवरानी का आना उसके लिए वास्तव में वरदान था। अब तक वह सास-ससुर की प्यार-भरी थपकियों के आधार पर खुश थी। परन्तु अब देवरानी की तरफ सास-ससुर के स्नेह का झुकाव होने पर उसे अपनी शक्ति को परखने और बढ़ाने का मौका मिला था कि क्या वो इस सहारे के

बिना भी खुश रह सकती है, उसमें अपना दम कितना है? और यदि नहीं है तो उसे बढ़ाए। यूं तो प्यार-स्नेह की चाहना सबको है परन्तु फिर भी प्यार पर पहला हक हमेशा छोटे का होता है। छोटों को प्यार का हक देकर हम अब प्यार देने वाले बन जाएं। सास-ससुर से प्यार लेते-लेते अब उनकी तरह देने वाले बनें। परिवर्तन की इस मांग को ना समझा गया, ना स्वीकारा गया, परिणाम यह निकला कि परिवर्तन रूपी वरदान को श्राप बना लिया। उससे दुखी होकर जीवन को पतन की गहरी खाई में धकेल दिया।

### मन शक्तिशाली तो समस्याएं प्रभावहीन

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सबके बीच में रहकर वह एक-दूसरे से सीखता है और अपने को बदलता भी है। नए-नए लोग हमारे से जुड़कर उपरोक्त प्रक्रिया को सम्भव बनाते हैं। यदि हम उन नए जुड़ने वालों के साथ रहकर सीखने और बदलने की प्रक्रिया को नकार देते हैं तो नुकसान उठाते हैं। जैसे, एक सीढ़ी छत पर ले जाती है, दूसरी बेसमेन्ट में। यदि सामने खड़ी स्थिति का फायदा उठाने के बजाय उससे दुखी हो गए तो बेसमेन्ट में पहुँच जाएंगे और यदि फायदा उठाकर आनन्दित हो गए तो ऊँचाई पर पहुँच जाएंगे। समस्याओं के मूल में मन की कमजोरी होती है।

यदि राजयोग से मन को शक्तिशाली बना लिया जाए तो ये मानसिक समस्याएँ प्रभावहीन हो जाती हैं।

### अचानक जुड़ने वालों को स्वीकार करें

सार यही है कि जैसे कड़वी दवाई शरीर के लिए कल्याणकारी है उसी प्रकार न सहे जा सकने वाले लोग भी कड़वी दवाई की तरह कल्याणकारी होते हैं। वे हमारे लिए कोई कल्याणकारी सन्देश छिपाए हुए होते

हैं पर हमारी आंखें तो प्रतिकूल में छिपे अनुकूल को देख ही नहीं पातीं। यही हमारी छोटी दृष्टि का दोष है। इसे हम बदलें और इस प्रकार अचानक जीवन से जुड़ जाने वाले लोगों का धन्यवाद करें, उन्हें स्वीकारें और उनकी उपस्थिति को छत पर जाने वाली सीढ़ी बना लें। हम सब एक-दूसरे के सहयोग से अपने-अपने अनचाहे स्वभाव-संस्कार के कोने झाड़ लें और सम्पूर्णता के मार्ग पर अग्रसर हो जाएं।

## मिला कर्मगति का ज्ञान

- अशोक, जिला कारागार, बांदा

मेरा जन्म एक छोटे-से गाँव के किसान परिवार में हुआ जिसमें माता-पिता, तीन भाई व पांच बहनें हैं। मैं परिवार में सबसे छोटा हूँ। माँ-बाप व भाई-बहनों के बीच रहते मेरे लिए जैसे स्वर्ग था। गाँव में ही छठवीं कक्षा में पढ़ रहा था तभी पिता जी ने मेरा विवाह कर दिया। इससे मेरा भविष्य खराब हो गया। परिवार वालों ने बहुत कोशिश की पढ़ाने की लेकिन मैं बारहवीं तक ही पढ़ पाया। व्यसनो से ग्रसित हो अपनी जिन्दगी से तंग आ गया। ऐसा लगने लगा कि जीवन को समाप्त कर दूँ। जो भी नज़र आता था, उससे नफ़रत आती थी। कुसंग में आकर हत्या के केस में फँस गया और जेल में आ गया।

जेल में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा राजयोग कक्ष खोला गया है। वहाँ मैंने सात दिन का कोर्स किया और राजयोग का अभ्यास करना सीख लिया। कोर्स के दौरान मुझे स्वयं की व परमपिता परमात्मा की सत्य पहचान मिली। कर्मों की गहन गति का भी पता चला, तब मैंने समझा कि जैसा कर्म करूँगा, वैसा ही फल मिलेगा। फिर मैंने दृढ़ प्रतिज्ञा की कि मैं समस्त बुराइयों और व्यसनो को छोड़कर शिवपिता परमात्मा के बताये रास्ते पर चलूँगा। अब मैं प्रतिदिन ईश्वरीय महावाक्य सुनता हूँ और शिव बाबा के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ लेने से मुझे अथाह खुशी और शान्ति का अनुभव हो रहा है। मैं दिल से शिवबाबा के प्रति, बहनों के प्रति और जेल अधीक्षक के प्रति (जिन्होंने राजयोग कक्ष खुलवाया है) शुक्रगुजार हूँ। अब तो दिल से यही निकलता है, 'किसी ने अपना बना के मुझको मुसकराना सिखा दिया, अन्धेरे दिल में किसी ने हँस के चिराग जैसे जला दिया।' ❖

# क्रोध का शमन हुआ

● ब्रह्माकुमार अनिल मजिठीया, कांदिवली (मुम्बई)

**ज**ब मैं सात साल का लड़का था, एक स्वप्न मुझे बार-बार आता था – 'मैं रास्ते में दौड़ रहा हूँ, दौड़ते-दौड़ते मेरे पैर ज़मीन को छोड़ ऊपर उठने लगते हैं और मैं ऊपर उड़ान भरने लगता हूँ।' कुछ सालों तक यह स्वप्न आता रहा, फिर बंद हो गया। तब मैं इसका राज़ समझ नहीं पाता था परंतु हाँ, ऐसी भासना ज़रूर होती थी कि मैं सामान्य लोगों से कुछ अलग हूँ और ज़िन्दगी में कुछ अच्छा कार्य करना चाहता हूँ। मुझे परमात्मा ने इस धरती पर यूँ ही तो नहीं भेजा होगा, इसके पीछे कुछ तो मकसद होगा।

## ब्राह्मण जीवन की इच्छा

लौकिक दुनिया में ब्राह्मण वर्ण को सभी वर्णों में उत्तम और दुर्लभ माना गया है। भक्ति मार्ग में उनकी ज्यादा महिमा करते हैं और ब्राह्मण देव शब्द का प्रयोग करते हैं। मेरे मन में यह मंथन चलता रहता था कि अभी वैष्णव वर्ण में हैं तो ब्राह्मण जन्म पाने के लिए कौन जाने और कितने जन्म लेने पड़ेंगे। बचपन में, हवेली में ब्रह्मसंबंध दिलाकर मुझे जनेऊ पहनाई गई तो खुशी हुई। घर-परिवार में बरसों से बाल-कृष्ण और श्रीनाथ जी की भक्ति और सेवा चली आ रही थी जो मैं भी करने लगा। त्रिकाल संध्या, देवी-देवताओं की पूजा, पाठ, दर्शन,

प्रकृति पूजन सब कुछ करता रहा। ज्यादातर शिव की पूजा करता और ओम् नमो शिवाय का जाप सतत करता था। फिर भी भक्ति में भटकना और आधा-अधूरापन महसूस होता था।

## ब्रह्माकुमारीज़ में साप्ताहिक कोर्स

ब्रह्माकुमारी का नाम तो बहुत सुना था और चित्र प्रदर्शनी भी देखी थी, मन में ऐसा ख्याल था कि यह एक अच्छी संस्था है जो आध्यात्मिक ज्ञान और अच्छे संस्कार देने का शुभ कार्य कर रही है, इससे ज्यादा परिचय नहीं था। एक बार ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन का कांदिवली (मुम्बई) में कार्यक्रम आयोजित हुआ। उसके बाद सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स चला। युगल के साथ हमने भी कोर्स किया। भक्ति से हटकर कुछ नया ज्ञान मिला, अच्छा भी लगा। शुरू में अनेक सवाल उठते रहे, मनन-चिंतन चलता रहा, भक्ति और ज्ञान के बीच टकराव चलता रहा परंतु ज्ञान का तीर लग चुका था। प्रारंभ में मुरली क्लास और योग ढीले-ढाले चलते थे परंतु अचानक ऐसी कठिन परीक्षाएँ आईं जिन्होंने हमारी आँखें खोल दीं और ज़िंदगी को नया मोड़ दिया।



## अचानक का पार्ट

जिसका जन्म है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। यह सनातन सत्य है फिर भी जब खुद पर गुजरती है तब ठीक पता चलता है। सन् 2000 में लौकिक पिताजी ने अचानक शरीर छोड़ा, बड़ा सदमा लगा। उसी दरम्यान छोटे भाई का ऑप्रेसन हुआ, बड़े भाई डिप्रेसन में आ गये। घर बनाने में रुकावट आई, कारोबार में समस्याएँ आने लगीं। जैसे-तैसे परेशानी से बाहर आये। सात-आठ साल गुजरे कि लौकिक माताजी बीमार हुईं, फिर उन्होंने शरीर छोड़ा, बड़ा दुख हुआ। उसी समय अचानक सबसे छोटे लौकिक भाई (उम्र 45 साल) ने दिल के दौरे में शरीर छोड़ा। वे अपने पीछे पत्नी और दो छोटे बच्चों को छोड़ गये। लौकिक में माता-पिता की छत्रछाया चली गई और अचानक भ्राता जी गये तो संयुक्त परिवार में से जैसे माला के दाने टूटकर बिखरने लगे। ज़िंदगी का अंतिम सत्य सामने आकर खड़ा हो गया।

### परमात्मा मिल गये

सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन के साथ भाई-बहनें घर पर मिलने आये, आशवासन दिया। बाद में बहनजी ने मृत्यु प्रवचन और दिवंगत आत्मा के लिए शांतिदान किया। इसके बाद हम नियमित सेवाकेन्द्र पर जाने लगे। मधुबन में बापदादा से मिलन मनाकर गहरा प्रभाव पड़ा। हमें सही दिशा मिल गई। भक्ति में भटकना, पुकारना, माँगना बंद हो गया और आधा-अधूरापन भी दूर हुआ। हमें भक्ति का फल ज्ञान मिला। गीता-ज्ञान देने वाले स्वयं त्रिलोकीनाथ परमात्मा हमें परमपिता के रूप में मिल गये तो और क्या चाहिए? बापदादा ने हमें मुख-वंशावली ब्राह्मण बना दिया तो हमारी वो इच्छा भी इसी जन्म में पूर्ण हो गई। बचपन के स्वप्न वाले राज को भी समझा कि बाबा हमें फरिश्ता बन, रूहानी सेवा करने का इशारा दे रहे थे।

### विकारों पर विजय

आगे का लक्ष्य है कमी-कमजोरियों को मिटाकर विकारों पर विजय पाने का। मुझ आत्मा की कमजोरी थी क्रोध और ऊँची आवाज में बोलना। घर में किसी के गलत व्यवहार से तुरंत गुस्सा आ जाता था परंतु जब से ड्रामा का ज्ञान मिला है, पवित्रता के गुण को जानकर अपनाया है, तब से क्रोध और बाकी सभी विकारों पर विजय पाने में काफी सफलता मिलने लगी है। ❖

## क्रोध को पराजित करो

चण्डी प्रसाद उनियाल, दिलशाद कालोनी, दिल्ली

**पाँच** विकारों में काम-क्रोध अति प्रबल एवं घातक होते हैं। यहाँ हम क्रोध की जानकारी दे रहे हैं। आत्मबल में कमजोर व्यक्ति ज्यादा क्रोधित होता है क्योंकि उसका स्वयं पर नियन्त्रण कम होता है। क्रोध उठे ही ना ऐसा हो सकता है लेकिन उसके लिए जीवन शैली बदलनी पड़ेगी। वर्तमान समय सोचने का ढंग यह है कि हमेशा दूसरा कसूरवार है। अगर हम परेशान हैं, दुखी हैं तो लगता है कि दूसरा हमें कर रहा है। हम यह मानने को तैयार ही नहीं हैं कि यह सब कुछ हमारे भीतर से आ रहा है इसलिए क्रोध की ज्वाला फूट पड़ती है। क्रोध के लिए हम दूसरे को ज़िम्मेवार ठहराने की पूरी कोशिश करते हैं। जब तक ऐसा करते रहेंगे, क्रोध की ज्वाला को घी मिलता रहेगा।

### क्रोध को प्रथम सीढ़ी पर रोकें

क्रोध कैसे शांत हो? क्रोध क्यों आया? आने से पहले उसे रोकें। दूसरे काम में लग जाएं। क्रोध को प्रथम सीढ़ी पर रोक देना आवश्यक है। मध्य से लौटना मुश्किल है क्योंकि नकारात्मक ऊर्जा ने यात्रा आरम्भ कर दी है। अनेक दुर्घटनाओं का कारण आवेश है। क्रोध में मनुष्य अंधा हो जाता है और अनर्थ कर बैठता है। क्रोध के शान्त होने पर क्रोधी, पश्चाताप की अग्नि में जलता रहता है। क्रोधित व्यक्ति दांत किटकिटाता है। वाणी तेज व कर्कश हो जाती है। भोजन करते हुए ऐसे चबाता है जैसे उसे मार रहा हो और बोलता है, कच्चा चबा जाऊँगा। क्रोधी व्यक्ति का भोजन दुगने समय में पचता है। क्रोधी सोते समय दांत पीसता है जिससे उसके दांत कमजोर हो जाते हैं। उसका प्रेम भी क्रोध समान ही होता है।

### क्रोध का ज़िम्मेवार स्वयं को समझें

क्रोध दब गया तो मवाद बन जायेगा। दबा क्रोध बीमारियों की जड़ है। क्रोध के मामले में पुरुष, स्त्री से दुगने पागल होते हैं। पुरुष क्रोध को दबा लेता है, स्त्री रो-धोकर, स्वयं को पीटकर, चीख कर क्रोध का वमन कर लेती है इसलिए चालीस वर्ष के पश्चात् हृदयाघात से पुरुष ज्यादा मरते हैं। क्रोध का मूल बिन्दु वहाँ है जहाँ हमने दूसरे को ज़िम्मेवार ठहराया। इसी बिन्दु पर रुक जाएँ, तो ऊर्जा सकारात्मक रहेगी और क्रोध शरीर में ज़हर नहीं फैला पायेगा। इसमें सफल हो गए तो करुणा का अमृत शरीर में बहेगा। इसलिए क्रोध को पराजित करो, स्वस्थ रहो, शान्त रहो। ❖

# शान्ति है जीने की ऊर्जा

● ब्रह्माकुमार गुणवन्त पाटील, बिबवेवाडी, पुणे

Lord Buddha left his palace in search of peace and we are all in search of palace at the cost of peace. (अर्थात् तथागत ने शान्ति की तलाश में महल छोड़ा और हम अपनी शान्ति खोकर महल ढूँढ़ रहे हैं) यह एक कड़वा सच है लेकिन हमें अन्तर्मुखी करने के लिए काफी है। आजकल की भागदौड़ में, सम्पत्ति की होड़ में, हम अपनी शान्ति गंवा बैठे हैं मानो अशान्ति का शाप हम भुगत रहे हैं।

**श्रेष्ठ कर्म ही रख सकते हैं**

**शान्ति बहाल**

क्या चीज़ है शान्ति? क्या है शान्ति की परिभाषा? क्यों हमारी शान्ति बार-बार प्रभावित होती है? दुनियावी बातें सुखद हों या दुःखद, कभी हमारी उदासी तो कभी खुशी का कारण क्यों बनती हैं? इसका हमें ज़रूर चिंतन करना है। मनुष्य दो चीज़ें ज़रूर चाहते हैं। एक शान्ति, दूसरा सुख। वास्तव में सुख-शान्ति परमात्मा से हमें मिली मौलिक सौगातें हैं। हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। आत्मा की सुंदरता है। ये भौतिक चीज़ों की भरपूरता से नहीं, त्याग और परोपकारी वृत्ति से पनपती हैं। हमारे श्रेष्ठ कर्म, अच्छे कर्म ही हमारी शान्ति बहाल रख सकते हैं।

**धनवान वही जो कम**

**इच्छाएँ रखता है**

शान्ति का आधार प्रेम, धैर्य, नम्रता आदि दैवीगुण हैं। शान्ति से सम्पन्न होकर ही हम सन्तुष्ट हो सकते हैं। शिवधाम को शान्तिधाम भी कहते हैं। शान्तिधाम से आई आत्मा का स्वधर्म शान्ति है। शान्ति आत्मानुभव की शक्ति है। यह शक्ति मन की विनाशकारी आदतों बदलने का चमत्कार कर सकती है इसलिए सर्व शक्तियों से श्रेष्ठ है। अन्तर्मुखता में तथा एकान्त की अनुभूति में रहने से प्राप्त शान्ति हमारा जीवन खुशहाल, समृद्ध बनाती है। शान्ति के स्वरूप में रहने से व्यक्तित्व निखरता है। कई सोचते हैं, सबकुछ पैसे से मिलता है लेकिन सच्चा धनवान वो है जो कम इच्छायें रखता है और औरों के भले की ज्यादा सोचता है। इच्छा इन्सान को अच्छा नहीं बनने देती। इच्छायें तो हमारी ज़रूरतें बढ़ाती हैं।

**शान्ति के अस्त का कारण है**

**तनाव**

मोम खत्म होने से शमा बुझती है, तेल खत्म होने पर चिराग बुझता है लेकिन सूर्य कभी बुझता नहीं। वह ढलता है, फिर निकलता है। शान्ति भी ऐसी ही है। वह डूबती है लेकिन गुम नहीं होती। शान्ति के इस उदय-अस्त

का कारण है तनाव। इच्छा, आशा-आकांक्षा, समस्या, परिस्थिति, चिंता, दुःख ये सब तनाव पैदा करते हैं जिससे हमारी शान्ति प्रभावित होती है।

**खोकर भान, लगेगा ध्यान**

अशान्ति का ढोल नहीं पीटना है बल्कि उस पर हावी होने और जीत पाने का पुरुषार्थ करना है। साक्षीद्रष्टा होकर धैर्य से सामना करना है। वेदना को खेल मानने वाला ही सही अर्थ में हँस सकता है। संसार में रहते कारोबार का भान ज़रूरी है लेकिन अध्यात्म में यही भान खोना पड़ता है। देहभान भूलना पड़ता है। भान खोया तो ही ध्यान (योग) लगेगा। अध्यात्म अर्थात् आत्मबोध। आत्मबोध का अर्थ है आत्मा और परमात्मा की सत्य पहचान। आत्मा और परमात्मा का यथार्थ सम्बन्ध अनुभव करना यही है आत्मगौरव अनुभव करना। यह स्थिति स्व-उन्नति और विश्वकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है तथा आत्माओं को बाह्य प्रभावों से मुक्त रखती है। यह अवस्था अन्तर्मुखता बढ़ाती है। अन्तर्मुखी सदा सुखी कहते हैं। अन्तर्मुखता से शान्ति, सन्तुष्टि, समृद्धि आती है।

**दूसरे करें हमसे शान्ति-कुण्ड की अनुभूति**

हम परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना

हैं। वे हमें सर्वदा सुख-शान्ति का वरदान दे रहे हैं। इन वरदानों से हमारा जीवन खुशहाल हुआ है। हमें हंसना सीखना है। हंसी से मन की गांठें खुलती हैं। हमारी हंसी से, मुसकराहट से सामने वाली दुखी

आत्माओं की बाँछें खिल सकती हैं। यह है जैसे कि दूसरे के हाथ को इत्र लगाना। जीवनबंध में फंसी आत्माओं की मुक्ति के लिए हमें ज्ञान का स्वरूप बनने की आवश्यकता है। हम इतने शान्ति स्वरूप बनें जो दूसरे हमसे

शान्ति-कुण्ड की अनुभूति करें। हमारी शान्ति जीने की ऊर्जा बने। अपने मन-वचन-कर्म से शान्ति के स्पंदन विश्व में फैलते हैं, यह प्रयोग हमारा अभ्यास बने।



## लुट जाने का दर्द

● ब्रह्माकुमार हरि, लारेन्स रोड, दिल्ली

मेरी रामपुरा-त्रिनगर, दिल्ली में एक स्टेशनरी की दुकान है। एक दिन दुकान के बाहर सरकार की तरफ से, पार्क की मरम्मत के लिए पीली मिट्टी के तीन-चार ट्रक गिराये गये जिससे दुकान के आगे मिट्टी का ढेर-सा लग गया।

अगले दिन देखा, उस मिट्टी के ढेर में बहुत-से जानवर (कुत्ते) पैरों द्वारा गड्ढा बना रहे थे। मुझे समझते देर नहीं लगी कि गड्ढे को ये जानवर अपने घर का आकार दे रहे हैं। उन सब में से एक ने अंत तक पुरुषार्थ करके घर की पूरी आकृति तैयार कर ली और उसके अन्दर बैठकर मानो पूरी तरह से सुरक्षित महसूस करने लगा। यदि वह बाहर कहीं जाता तो भी चार-पाँच मिनट बाद पुनः लौट आता। लौटकर अपने द्वारा बनाये गये घर के बाहर बैठ जाता। इससे जो खुशी उसे मिल रही थी, इसका अन्दाज़ा उसे देखकर ही लगाया जा सकता था।

मेरे मन में विचार आया कि यह जानवर कितना नादान है। इसे यह नहीं मालूम कि उसके द्वारा बनाया गया यह घर कुछ ही समय में ध्वस्त होने वाला है जब सरकारी कर्मचारी आकर मिट्टी को

उसके निश्चित स्थान (पार्क) में पहुँचा देंगे।

लेकिन कुदरत को कुछ और ही मंजूर था। अचानक वहाँ एक गाय आयी, उसने अपने सींगों द्वारा उस जानवर के घर को उथल-पुथल कर दिया। वह लगभग 3-4 मिनट तक अपने ध्वस्त मकान को देखता रहा, उसके बाहर अपना सिर मिट्टी से लगाये बैठा रहा। इस समय उस के साथी वहाँ उपस्थित नहीं थे। वह अकेला ही इस परिस्थिति से लड़ रहा था।

यह देख उत्तराखण्ड की दिल दहला देने वाली घटना मेरे मन में रेखांकित हो आई। साथ ही साथ यह विचार भी आया कि प्राकृतिक विपत्तियों, गृहयुद्धों और अणुयुद्धों के कगार पर बैठे इस विश्व के साथ भी कल उस जानवर जैसा घटित हो जाए, इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। आवश्यक है कि मनुष्य उपरामता के साथ सुख-साधनों का प्रयोग करना सीख ले, नहीं तो सब कुछ लुट जाने का दर्द ना जीने देता है और ना शान्ति से संसार से जाने देता है। निमित्त भाव और नम्रता भाव से जीवन व्यतीत करें, यही समाधान है। ❖

गतांक से आगे...

## आत्म प्रबन्धन से जीभ प्रबन्धन

● ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

**अ**पनी प्रशंसा सुनने में मनुष्य को अल्पाहारी होना चाहिए और मात्र एक कान से सुनना चाहिए। अपनी आलोचना दोनों कानों से सुन कर, उसमें से काम की बातें अनुभव में रख, व्यर्थ को त्याग देना चाहिए। दूसरे की निन्दा, चुगली आदि एक कान से सुन कर दूसरे से निकाल देनी चाहिए परन्तु ईश्वरीय महावाक्य दोनों कानों से सुन कर मुँह से निकालते रहना चाहिए।

**प्रवचन कर्म से,  
न कि चर्म से**

आज का मनुष्य बोलने के लिए मौके की तलाश में रहता है। जैसे कि एक कवि अपनी कविता सुनाने के लिए किसी श्रोता की तलाश में रहता है, चाहे वह कविता समझने लायक हो या न हो। परन्तु एक ज्ञानवान, प्रज्ञावान, विवेकवान मनुष्य चुप रहने के मौके की तलाश में रहता है। पहले, संन्यासियों की साधना का एक सशक्त माध्यम था मौन परन्तु आज स्थिति उलट गई है। तीन दशक पहले तक, एक सच्चा संन्यासी या साधक अपनी साधना में से थोड़ा समय निकाल कर प्रवचन करता था परन्तु आज के संन्यासी अपने प्रवचन के कार्यक्रमों में से थोड़ा समय साधना या

स्व-पुरुषार्थ के लिए निकाल रहे हैं। जिन्हें 'कर्म' से प्रवचन करना चाहिए, वे 'चर्म' (जीभ) से प्रवचन करते नज़र आ रहे हैं। वे अपने भक्तों को ज्ञान सुनाते हैं जबकि उन्हें ज्ञान दिखाना चाहिए। भाषण से ज्यादा प्रभावशाली तो भासना होती है। भाषण शब्दों का खेल है जबकि भासना तो दिल की महसूसता है। शिवबाबा ने कहा भी है कि आपके हर कर्म द्वारा बाप की प्रत्यक्षता हो....। भाषण करने वाले तो सभी बनते हैं लेकिन अपने हर कर्म से भाषण करने वाले कोटों में कोई होते हैं।

**कम बोलें, कम खाएँ**

हरिद्वार में एक विदेशी पर्यटक से भारत में उसे हुए अनुभव के बारे में पूछा गया। वह बोला कि यहां के लोगों में दो बातें विशेष हैं। पहली है कि किसी भी समय यहां चाय पी ली जाती है और दूसरी विशेषता है कि यहां का हर व्यक्ति बिन मांगे ही एक-दूसरे को राय देता रहता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए यह ज़रूरी है कि मनुष्य कम से कम बोले और जितनी भूख हो, उससे 10 प्रतिशत कम भोजन ग्रहण करे। यदि मन व पेट 10 प्रतिशत खाली रखे जाएँ तो स्वास्थ्य 90 प्रतिशत सही रहता है।

**देखो, समझो ज्यादा; बोलो कम**

मनुष्य को आंखें तो दो मिली हैं और जीभ एक। दो आंखें अर्थात् ज्यादा देखो व समझो और एक जीभ अर्थात् कम बोलो। आंखों की रक्षा के लिए मात्र पलकें ही काफी हैं परन्तु जीभ की रक्षा करने के लिए 32 पहरेदारों का घेरा लगा होता है। आंखों में 'काम' विकार ज्यादा होता है और जीभ में 'लोभ' का विकार ज्यादा होता है। कहावत है कि मनुष्य अपनी कब्र अपने दांतों (गलत खान-पान) से खोदता है।

**सदा मुसकराते रहिए**

शान्त जीभ कई समस्याओं से किनारा करा सकती है परन्तु मुसकराते हुए होंठ तो कई परिस्थितियों को किनारे लगा देते हैं। मुसकराना समस्याओं या परिस्थितियों का एक समाधान बन जाता है। जीवन में सब कुछ अनुकूल होते हुए मुसकराना आसान है परन्तु वह व्यक्ति श्रेष्ठ है, जो जीवन में सब कुछ प्रतिकूल होते हुए भी मुसकराना जानता है। आप जीभ को विराम दिए बिना मुसकरा नहीं सकते। कैसी भी जीभ क्यों न हो, इसके एक इन्च के फासले पर होंठ होते हैं, जोकि रिशतों के फासलों को मुसकरा कर पाट देते



हैं। फिसलती जीभ है और संभालते होंठ हैं। यह एक कुदरती व्यवस्था है कि जहां से दर्द पैदा होता है (जीभ), उसी के समीप उस दर्द की दवा (मुसकान) भी होती है। अतः इस खूबसूरत यात्रा में, जिसे जीवन कहा जाता है, सदा मुसकराते रहना चाहिए।

### मौन आनंद का अग्रदूत

दार्शनिक संत आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में, 'मौन का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि हम न बोलें। मौन का मूल अर्थ है कि हमारी बोलने की अपेक्षा ही मौन हो जाएं। अपेक्षा इतनी कम हो कि बोलने की ज़रूरत ही न रहे।' ब्रह्मामुख से शिवबाबा ने 'वैराग्य' और 'साक्षीद्रष्टा' का महत्त्व समझाया है और इन दोनों का प्रभाव हमें अपेक्षाहीन व मितभाषी बनाता है। मौन लाभदायक है परन्तु ईश्वरीय-ज्ञान के प्रचार-प्रसार के समय मुखर होना कल्याणकारी है। स्वयं के लाभ के साथ-साथ विश्व का कल्याण भी हो, इसका सन्तुलन भी आवश्यक है। यह भूलना नहीं चाहिए कि विश्व के कल्याण में अपना कल्याण भी छिपा हुआ है। शेक्सपीयर ने मौन के महत्त्व के बारे में कहा था कि 'मौन आनन्द का पूर्ण अग्रदूत है। आनन्दमय नहीं हूँ, यदि मैं बता सकूँ कि कितना आनंदित हूँ।' शेक्सपीयर मौन में रहते कलम से मुखर हुए और उनकी

साहित्यिक सेवा से मनुष्य आज तक आनंदित हो रहे हैं।

### वाणी का तप है मौन

मौन में रहने से वाक्-शक्ति का परिवर्तन ओज-शक्ति में हो जाता है। जैसे-जैसे संकल्पों की संख्या घटती जाती है, वैसे-वैसे 'इच्छा-शक्ति' बलवती होती जाती है। लम्बे समय तक मौन में रहना वाणी का तप है। गौतम बुद्ध ने शुरू में 12 साल तक साधना में सारे उपाय अजमाए परन्तु असफल रहे। अन्त में जब वे गहन मौन की साधना में उतरे, तो सत्य का साक्षात्कार हो गया। परन्तु उस सत्य का, जो जीवन से सम्बन्धित है; उस सत्य का नहीं, जो जीवनदाता (शिव व कुदरत) से सम्बन्धित है। पूर्ण सत्य तो मात्र शिव से ही जाना जा सकता है।

### बापू जी हंस पड़े

जब हृदय बोले और जीभ खामोश रहे तो प्रार्थना शुरू होती है। आज़ादी के आन्दोलन के दौरान गाँधीजी अपने काफिले के साथ दक्षिण भारत की पद-यात्रा पर थे। एक रात वे दो बजे उठ कर रोने लगे। पूछने पर बोले कि बचपन में मां के द्वारा धारण कराया गया नियम कि प्रार्थना किए बिना नहीं सोना है, आज टूट गया। इस पर काका कालेलकर ने, जो कि पद-यात्रा में शामिल थे, गांधीजी से कहा कि बापू, आप दुखी न हों और मेरी एक कहानी सुनें। आपके जैसा एक

भक्त कभी भी प्रार्थना किए बिना नहीं सोता था और यदि कभी थकान की वजह से ऐसा हो जाता था, तो शैतान उसे हिला कर कहता था कि पहले प्रार्थना कर। उस भक्त ने सोचा कि शैतान तो भगवान की पूजा-आराधना के खिलाफ रहता है, फिर यह मुझे भगवान से प्रार्थना करने को क्यों कहता है! जब एक बार फिर शैतान ने उसे हिलाया तो भक्त ने यह बात उससे पूछी। शैतान बोला, जब तुम्हारे जैसे किसी सच्चे भक्त का यह प्रार्थना वाला नियम टूटता है, तो भक्त पश्चाताप में सच्चे दिल से रोता है। इस पर भगवान उस भक्त को गोद में उठा कर प्यार करते हैं। यह दृश्य मुझे घायल कर देता है। मैं नहीं चाहता कि भगवान तुम्हें कभी गोद में ले कर प्यार करें, अतः मैं तुम्हारे नियम का खास ध्यान रखता हूँ। इस कहानी पर बापू व अन्य सभी हंस पड़े। इससे यह पता चलता है कि शब्दों के द्वारा की गई प्रार्थना से ज्यादा कीमत सच्चे दिल के पश्चाताप की है। पश्चाताप हृदय की पवित्रता से किया जाता है, न कि जीभ की चपलता से। कभी-कभी शारीरिक थकान नियम तुड़वा देती है परन्तु दिल में उठा पाश्चाताप इसकी भरपाई कर देता है।

### जो अभिमान पैदा करे

### वह प्रार्थना नहीं

यदि प्रार्थना से अभिमान पैदा

हुआ, तो वह प्रार्थना थी ही नहीं। शेख सादी जब युवा थे, तो एक बार अपने पिता के साथ हज यात्रा पर मक्का जा रहे थे। उनके दल का यह नियम था कि सुबह जल्दी उठ कर प्रार्थना की जाए, अल्लाह को याद किया जाए। सादी ने देखा कि कुछ लोग अल्लाह की याद के समय में भी सोए रहते हैं। उसने अपने पिता से कहा कि अब्बा, देखो कुछ लोग अल्लाह की याद के समय में भी सोए रहते हैं। सादी के पिता को यह बात अच्छी नहीं लगी। वे बोले, बेटा, तू जल्दी उठ कर दूसरों की निंदा करता है। इससे तो तू भी सोया रहता, तो निंदा से तो बचता। तो यह जीभ ही है जो प्रार्थना से हुए लाभ को नुकसान में बदल देती है।

### मन की चादर फटने न पाए

जीभ के मीठे बोल कटे हुए सम्बन्धों को जोड़ देते हैं परन्तु प्रेम की डोरी से चाहे कितने भी महीन टांके लगाए जाएं, जोड़ तो नज़र आता ही है। कांच के टूटे बर्तन को जोड़ने पर भी उसकी मौलिक शोभा वापस नहीं आती। फटा करेन्सी नोट चाहे कितनी भी सफाई से जोड़ा जाए, बैंक में उसे छांट कर अलग कर दिया जाता है। भाव यह है कि चाहे किसी से कितना भी मनमुटाव हो जाए (मनमुटाव भी विकार है) परन्तु मन की चादर फटने न पाए। गंदी चादर धुलाई होने पर पुनः पहले जैसी हो जाती है परन्तु फट गई

चादर सिलाई करने पर भी पहले जैसी नहीं होती।

### साथ जाता है कर्मों का प्रभाव

आज के दौर में, मृत्यु के करीब आने पर व्यक्ति की जीभ शान्त व मन अशान्त हो जाता है। परिवार वाले उसे गंगा जल पिलाते हैं और उसके पास धर्मग्रन्थों का पाठ किया जाता है ताकि अन्त मति सो गति के अनुसार ये कल्याणकारी बोल उसके मन-बुद्धि को प्रभु-स्मृति में टिका सकें। परन्तु अन्त समय स्मृति उसी की आती है जिसके पीछे मनुष्य सारा जीवन भागा हो। सारा जीवन यदि प्रभु-स्मृति में एकाग्र होने का पुरुषार्थ नहीं किया है, तो अन्त समय में ऐसा करना संभव नहीं। मृत्यु से आत्मा भले ही जीव को छोड़ कर रवाना हो जाए परन्तु जीभ से उच्चारें गए दुखद व सुखद वाक्यों व उनसे बने कर्मों का प्रभाव तो आत्मा के साथ जाता ही है।

जीवन का सार टिका है जीभ के प्रबन्धन पर, जो आता है 'आत्म-प्रबन्धन' से। इस असार, कलियुगी जगत में भौतिक सम्पदाओं का प्रबन्धन करते-करते आत्मा पुनः कलियुग में ही आने का दुर्भाग्य बना लेती है। आइए, सहज राजयोग के ज्ञान से आत्म-प्रबन्धन करना सीखें और आने वाली सतयुगी दुनिया की प्रालम्ब जमा करने के इस दुर्लभ समय को यूँ ही न गंवाएं। (समाप्त)

## मैं और मेरा

ब्र.कु. दीपक चन्द्र, गाजियाबाद

ठहर जरा अब देख आइना,  
इस जीवन से क्या पाया है।  
बैठ कभी तो इस चिंतन में,  
कोई अच्छा कर्म कमाया है?

बचपन व्यर्थ बिताया तूने,  
मैं का पौध लगाया है।  
भरी जवानी मैं ही मैं हूँ,  
मैं और मेरा गाया है।

परचिन्तन को दोस्त बना कर,  
मन में मैल बढ़ाया है।  
हर पल देख कमी औरों में,  
अपना मोल गंवाया है।

और चाहिए, और चाहिए,  
नित यह रटन लगाया है।  
सुख का मिला नहीं एक पल भी,  
जीवन व्यर्थ गंवाया है।

मैं और मेरा, मैं और मेरा,  
मन में यही समाया है।  
छीन-छीन कर हक औरों का,  
अपना मान गिराया है।

छोड़ गए जब बंधु-सखा सब,  
तब थोड़ा पछताया है।  
नहीं मानता फिर भी यह मन,  
मैं और मेरा गाया है।

अभी वक्त कुछ थोड़ा-सा है,  
ईश्वर ने बतलाया है।  
कर समर्पण इस मैं-पन का  
जिसने तुझे गिराया है।

तुझे मिलेंगे रत्न यहीं पर,  
ताज यहीं पर, तख्त यहीं पर।  
तू ही होगा देव धरा पर,  
प्रभु पैगाम ले आया है।

# विदेश में देखी विविधता में एकता

● ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

**सि**तम्बर और अक्टूबर, 2013 में मुझे प्यारे बाबा की सेवार्थ मारीशस, मेडागास्कर, बर्मा और श्रीलंका देशों की यात्रा पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पिछली विदेश यात्राओं से यह यात्रा कई अर्थों में निराली थी। हरेक देश की संस्कृति से रूबरू होने का मौका मिला। लोगों से मिलकर कहीं भी ऐसा अहसास नहीं हुआ कि वे विदेशी हैं। सभी अपने ही लगे, सभी स्थानों पर कुछ न कुछ सीखने को मिला। मैंने अनुभव किया कि सभी अलग-अलग देश होने के बावजूद एक ही हैं। सभी ईश्वरीय ज्ञान के चात्रक हैं और भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं।

यद्यपि ये सभी छोटे देश हैं लेकिन यहाँ के निवासियों के दिल बड़े विशाल हैं, आवभगत अव्वल दर्जे की है। सभी देशों में पब्लिक कार्यक्रम, रेडियो वार्ता, संगोष्ठी, इंटरव्यू, सेमीनार आदि के माध्यम से बाबा की सेवा की खूब धूम रही। ज्यादातर कार्यक्रम इंटरैक्टिव हुए, प्रत्येक कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रश्नोत्तर भी हुए। प्रस्तुत हैं कुछेक चुनीदा प्रश्न और दिए गये उत्तर –

**प्रश्न:- मेडागास्कर में एक**

**विद्यार्थी ने पूछा, मेरा जीवन तनावग्रस्त है, कृपया तनाव का सामना करने की कोई विधि सुझायें?**

**उत्तर:-** आधुनिक समय में तनाव सर्वव्यापी हो गया है। आज बच्चे, बड़े, अधिकारी, गृहिणी, वृद्ध सभी तनावपूर्ण जीवन जी रहे हैं। इससे बचने की सहज विधि है अपनी मनःस्थिति को सदा ऊँचा रखना। समस्या कभी भी स्थायी नहीं होती है, आती है, चली जाती है। वास्तविकता तो यह है कि हर कठिनाई कोई शिक्षा भी देकर जाती है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति (अब्राहम लिंकन) ने कहा था कि मेरा बड़प्पन इसमें नहीं कि मैं कभी गिरा नहीं बल्कि इसमें है कि मैं गिर कर हर बार ऊँचा उठ गया अर्थात् मैंने अपनी हर भूल से कुछ न कुछ सीखा है। तनाव से बचने के लिए परीक्षा की पूरी तैयारी करें, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायें, दूसरों के सहयोगी बनें और प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास अवश्य करें।

**प्रश्न:- श्रीलंका में एक गृहिणी ने पूछा, क्या इस समय के भयावह वातावरण में हम अपने आप को सदा खुश रख सकते हैं?**

**उत्तर:-** प्रसन्नता मन की अवस्था है।



मेडागास्कर: भारतीय राजदूत बहन मंजू सेठ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई।

नज़रिया नकारात्मक होने से खुशी गुम हो जाती है। सकारात्मक चिंतन मन को खुश रखता है। मैं अच्छा हूँ, दूसरे भी अच्छे हैं। सबसे गुण ग्रहण करूँ, सबसे अच्छा बर्ताव करूँ, सबसे इंसानियत से पेश आऊँ तो प्रसन्नता सदा के लिए साथी बन जाती है। देने में खुशी है, लेने में नहीं अतः सब को कुछ न कुछ दें। परमात्मा ही सर्वोच्च रक्षक हैं। उनकी याद में रहने से हमारे चारों ओर सुरक्षा-चक्र बन जाता है, हम हर हालत में सुरक्षित महसूस करते हैं और मन में निर्भयता आ जाती है फलस्वरूप जीवन खुशनुमा बन जाता है।

**प्रश्न:-** बर्मा में एक सरकारी कर्मचारी ने पूछा, हम दूसरों से अच्छा व्यवहार करना चाहते हैं पर दूसरे हमें हमेशा नीचे गिराने की भावना रखते हैं, कोई समाधान?

**उत्तर:-** भारत में पुरानी कहावत है, कोई यदि मेरे लिए कांटे भी बोये तो भी मैं उसके लिए फूल बोऊं। जो जैसा करता है वैसा ही भरता है। ठंडा लोहा गर्म लोहे को काट देता है। संसार रंगमंच है, हर घटना के पीछे कोई न कोई कारण है। कोई यदि मुझे नीचे गिराने की कोशिश करता भी है तो मुझे और ताकत लगाकर ऊपर उठना है। कहा जाता है, 'आसमान के तारे कोई गिन नहीं सकता, मेरे भाग्य को कोई छीन नहीं सकता।' हम दूसरों की बुराई के कारण कभी भी अपनी अच्छाई को न छोड़ें, आज नहीं तो कल सामने वाला भी अवश्य बदल जायेगा। आज स्थिति प्रतिकूल है लेकिन कल अनुकूल होनी ही है, सदा अच्छा सोचें।

**प्रश्न:-** बर्मा में एक व्यापारी ने पूछा, कारोबार में व्यस्त रहने से मन त्रस्त रहता है, कृपया कोई समाधान बतायें?

**उत्तर:-** अनुभव सम्मत है कि तन में थकावट तो बहुत बाद में आती है लेकिन पहले हमारा मन थक जाता है। उदाहरणस्वरूप जब

लगातार खेलते-खेलते खिलाड़ी थक जाता है तो ऊर्जा के स्तर को बनाए रखने के लिए बीच-बीच में ऊर्जायुक्त पेय लेता है और पुनः उसी शक्ति के साथ खेलना शुरू कर देता है। ठीक इसी प्रकार सारे दिन व्यापार में व्यस्तता के कारण और चारों ओर नकारात्मक ऊर्जा के कारण मन थक जाता है। इससे बचने का सहज उपाय है कि हम स्वयं को बुद्धियोग द्वारा आध्यात्मिक ऊर्जा के केन्द्रबिन्दु परमात्मा शिव से जोड़कर रखें ताकि हमारी आंतरिक ऊर्जा का स्तर समान बना रहे और मन स्वस्थ और शांत रहे। इससे हमारे कारोबार में भी बढ़ोतरी होती है और प्रसन्नता भी बनी रहती है।

**प्रश्न:-** श्रीलंका में एक क्लर्क ने पूछा, महंगाई के दौर में आमदनी और खर्च में संतुलन कैसे बनाया जाये?

**उत्तर:-** कोई व्यक्ति दस हजार कमाकर भी खुश है तो दूसरा एक लाख कमाकर भी रोता रहता है। इससे सिद्ध होता है कि ज्यादा कमाई सदैव खुशी नहीं दे सकती है। हमें वित्तीय प्रबंधन सीखने की आवश्यकता है। जरूरत है तो जरूर खर्च करें लेकिन अनावश्यक खर्चा, दिखावे के लिए खर्चा, दूसरों से तुलना करके खर्चा, इससे असंतुलन बढ़ जाता है। आध्यात्मिकता जीवन जीने की

कला सिखाती है। हर हाल में खुश रहना सिखाती है, हरेक के साथ तालमेल रखना सिखाती है। बजट बनाने से अपेक्षाकृत कम कमाई में भी जीवन की गाड़ी चलती रहती है। जो उपलब्ध है उसका आनंद लें और बेहतर भविष्य के लिए सदैव परिश्रमशील रहें।

**प्रश्न:-** मारीशस में एक कामकाजी महिला ने पूछा, संबंधों में समरसता लाने की विधि बतायें?

**उत्तर:-** संबंध मधुर बने रहें इसके लिए सदैव दूसरों की विशेषताओं को देखें तथा दिल से उनकी तारीफ करें। जो बात हम दूसरों में देखना चाहते हैं वह अपने जीवन में ले आयें। आज संबंधों में कटुता का सबसे बड़ा कारण अहम् और वहम है। दो में से यदि कोई भी एक झुक जाये तो संबंध टूटने से बच जाते हैं। इसलिए अभिमान को छोड़ स्वमान में रहें, दूसरों को सम्मान दें, दूसरों की बात को अहमियत दें, सब के प्रति रहम की भावना रखें। गलती कोई भी कर सकता है लेकिन हमारी रहम और सहयोग भावना हो तो संबंध मजबूत हो जायेंगे। संवादहीनता संबंधों को तोड़ देती है अतः हर हालत में मुझे संवाद कायम रखना ही है। परिणामस्वरूप यदि कोई बात मन में होगी भी तो समाप्त हो

जायेगी और संबंध मधुर बन जायेंगे।

**प्रश्न:-** वर्मा में एक बुजुर्ग ने पूछा, आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार आदि से कैसे निपटा जाये?

**उत्तर:-** काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ही सब समस्याओं की जड़ हैं। आतंकवाद आज भस्मासुर की तरह समूची मानवता को भस्म करने के लिए तैयार है। इससे मुक्त होने के लिए हमें सबको आत्मीयता का पाठ पढ़ाना होगा। मैपन और मेरेपन को छोड़कर सब को साथ लेकर चलना होगा। हम सब बराबर हैं, कोई छोटा अथवा बड़ा नहीं है। हम सबका पिता एक परमात्मा है। ऐसी भावना मन में जाग्रत हो तो आतंकवाद का खात्मा होते देर नहीं लगेगी।

भ्रष्टाचार ने राष्ट्रों की नींव को खोखला कर दिया है। इससे बचने के लिए संग्रह करना, स्वार्थ भावना, लोभ भावना, विलासितापूर्ण जीवन आदि से बचना होगा। हमें राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरना है। मैं बाद में हूँ, पहले देश है। यदि देश नहीं रहेगा तो मैं भी नहीं रह सकूंगा। सत्यता, कर्तव्यनिष्ठा, लगन व मेहनत ऐसे गुण हैं जो भ्रष्टाचार को समूल नष्ट कर सकते हैं।



## सच्चे प्रेम के आँसू

● ब्रह्माकुमार राजू, आबू पर्वत

स्कूल से विदाई लेते समय देखा था बच्चों को रोते हुए। मैं सोचता था कि स्कूल से कालेज जाने की तो खुशी होनी चाहिए, फिर रोते क्यों हैं? पर जब मेरी भी विदाई लेने की बारी आई तो सबके रोने पर मेरी आँखें भी भर आई, यही सोचके कि इस स्कूल, इन शिक्षकगण और सहपाठियों से सदा के लिए अलग हो रहा हूँ।

बहनों को देखा है शादी के दिन रोते हुए। यही सोचकर रोती होंगी कि यह घर, मात-पिता, भाई-बहनों से सदा के लिए अलग हो कर जा रही हूँ। कल तक जिसको अपना अधिकार समझ रही थी, कल से उस घर पर मेरा कोई अधिकार नहीं रहेगा। आज तक मैं आजाद पक्षी थी, किसी की छत्रछाया वा सुरक्षा में पल रही थी, कल से पिंजरे के अन्दर मुझे रहना पड़ेगा। ऐसे ही किसी का कोई प्रियजन गुजर जाये तो उसकी याद में दुखी होकर रोते हैं। एक बार जरा सोचें, हम सभी आत्माओं को भी एक दिन इस धरती से, इस प्रकृति से अलग होना पड़ेगा, तो क्या दुख नहीं होगा? पहले तो शरीर के लिए और फिर शरीर की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए हम दिन-रात प्रकृति से लेते रहते हैं। जब सब कुछ छोड़ इस प्रकृति जगत से विदाई लेनी पड़ेगी तो क्या लिए हुए का मोह नहीं खींचेगा? उस समय धरती की आकर्षण को छोड़ क्या आत्मा उड़ सकेगी? अतः समय रहते, लिये हुए ऋण चुका दें और देह से न्यारा होने का अभ्यास परिपक्व कर लें।

शिवबाबा ने कलियुगी दुख व बंधन वाली जीवन से मुक्त कर हमें निःस्वार्थ स्नेह भरा दैवी परिवार दिया है। रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान देकर हमें ज्ञानी बनाया है। अतीन्द्रिय सुख और शान्ति का अनुभव कराया है, तीनों लोकों में उड़ने का अनुभव कराया है। रोज ज्ञान की मुरली द्वारा प्यार और सम्मान देकर हमें बहलाया है। हर कदम, हर सम्बन्ध से साथी बन मदद देकर असम्भव को सम्भव किया है, निश्चिंतता और नशे का अनुभव कराया है। भगवान ने अपना कर्तव्य हमें सिखाकर स्वयं भी सम्मान दिया है और दुनिया से सम्मान दिलवाया है।

सृष्टि परिवर्तन के समय जब सभी आत्माएँ वापिस घर (परमधाम) लौटेंगी तो भगवान के ये सब उपकार याद आयेंगे और साथ ही जिगरी अहसास होगा कि ऐसे बाबा से हम पाँच हजार वर्ष के लिए अलग हो जायेंगे! उस समय भी प्रेम में आँसू आयेंगे लेकिन ये खुशी के होंगे, दुख के नहीं। सच्चे प्रेम में अविनाशी सुख होता है, दुख नहीं। विनाशी प्रेम में मोह होता है और मोह दुख का कारण है। ❖



**भा**ग्यविधाता बाप के अनेक चरित्रों को साकार में निज नेत्रों से निहारने वाली, बाल्यावस्था से ही उनकी अलौकिक पालना का मधुर रसपान करने वाली ब्र.कु. शान्ति बहन पिछले 45 वर्षों से ईश्वरीय सेवा में समर्पित थी। देश-विदेश में लाखों आत्माओं की आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणास्रोत आप वर्तमान में दिल्ली सिरीफोर्ट सेवाकेन्द्र की निदेशिका के रूप में ईश्वरीय सेवारत थी।

आपकी लौकिक बुआ गोपी दादी यज्ञ स्थापना के समय कराची में समर्पित हुई। यज्ञ के आबू में स्थानान्तरित होने के बाद बाबा ने लौकिक सम्बन्धियों की सेवार्थ गोपी दादी को दिल्ली में भेजा। गोपी दादी सेवार्थ पहली बार सन् 1952 में आपके लौकिक घर दिल्ली में आई और दुबारा सन् 1957 में आई तब उन्होंने विस्तार से ज्ञान सुनाया। आपकी माता (गीता बहन, ओ.आर.सी.), पिताजी (गोपाल दादा) और आप (7 वर्ष) नियमित सेंटर पर जाने लगे। साल भर बाद प्यारे बाबा से मिलने आबू में आना हुआ। तब तक आपके परिवार के दस सदस्य एक साथ ईश्वरीय परिवार में शामिल हो चुके थे।

आठ साल की आयु में आप

पहली बार माता-पिता के साथ आबू पर्वत स्थित पांडव भवन में आई। गोपी दादी साथ थी। मुलाकात के समय बाबा ने उनसे पूछा, क्या शान्ति इकलौती ही है, तो गोपी दादी ने बताया कि यह हमारा भाई (गोपाल दादा) शादी करना ही नहीं चाहता था, यह बच्ची भी भूल से आ गई है। तब बाबा ने कहा, यह यज्ञ से गई हुई आत्मा है, यज्ञ में वापिस आ गई है, इस बच्ची का विशेष पार्ट है और आगे चलकर यह लाखों की सेवा के निमित्त बनेगी।

छोटी आयु में ही आप योग में शान्ति और एकाग्रता से बैठती थी। दृष्टि भी स्थिर रहती थी इसलिए आपको स्टेज पर योग कराने बिठा देते थे। मुरली भी काफी समझ में आती थी। पूर्व जन्म के संस्कारों का भी सहयोग मिल रहा था। हर साल छुट्टियों में बाबा के पास आती थी। जैसे लौकिक पिता बच्चे की पढ़ाई की रिपोर्ट देखते हैं, ऐसे बाबा भी देखते थे। बाबा समझाते थे कि आपके हर कर्म से सेवा होनी चाहिए। ज्ञान में आने के बाद यदि पढ़ाई में नम्बर कम आए तो मित्र-सम्बन्धी कहेंगे, ज्ञान में चलने के कारण नंबर कम आते हैं इसलिए नंबर कम नहीं होने चाहिए। पढ़ाई मन लगाकर पढ़ना है ताकि

बाबा का नाम ऊँचा हो। प्यारे बाबा ने आपको लौकिक पढ़ाई पढ़ते रहने की श्रीमत दी और कहा, तब तक पढ़ते रहो जब तक आपको यह आत्मविश्वास हो कि मैं अंग्रेजी अच्छी तरह बोल सकती हूँ।

इस प्रकार आप प्यारे बाबा के अनेकानेक वरदानों की छत्रछाया में पली, बड़ी और बहुत ही सराहनीय सेवाओं के निमित्त बनी। आपका स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक नहीं था। हॉस्पिटल में 5 दिन रही परंतु आपकी हार्दिक इच्छा थी कि मैं बाबा के घर से ही विदाई लूँ। इसलिए आपको आठ अक्टूबर, 2013 को सिरीफोर्ट सेवाकेन्द्र पर सवेरे दस बजे लेकर आए। गुलज़ार दादी, मोहिनी बहन (न्यूयार्क), रुक्मिणी दादी, बृजमोहन भाई व दिल्ली की वरिष्ठ बहनें दृष्टि दे रही थीं। आपने आठ अक्टूबर, 12.15 बजे अपने पार्थिव देह का त्याग कर बाबा की गोद वतन में ली। मोहिनी बहन न्यूयार्क, गायत्री बहन न्यूयार्क, गीता बहन सिरीफोर्ट, बीना बहन चेन्नई, लक्ष्मण भाई और सुंदरी बहन मालवीय नगर, सभी लौकिक

एवं अलौकिक परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे। दिल्ली के समस्त ब्राह्मण परिवार की उपस्थिति में सायं 5 बजे अंतिम संस्कार किया गया। आपकी आयु 62 वर्ष थी। समस्त दैवी परिवार आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करता है और मन ही मन कह रहा है –

जो एक बार मिले, वो मिलना चाहे दोबारा,  
प्यार इतना कि समा जाये जग सारा,  
आसमान में जैसे चमकता हुआ तारा,  
मन ऐसा निर्मल जैसे गंगा की धारा।  
धरती पर जैसे खुदा का इशारा।।  
बगिया में जैसे एक खिला हुआ फूल,  
पत्तियों पर जैसे ओस की पहली बूँद।  
बच्चे की जैसे हो पहली किलकारी,  
ऐसी थी प्रिय शांति बहन हमारी।।

### नूतन चिन्तन

जगदीश 'जोशीला', खरगोन

ऊबड़-खाबड़ पथरीली भू का, उलट-पलटकर सिंचन हो।  
स्वप्न तभी साकार है सम्भव, जब नित नूतन चिन्तन हो।।  
अब तक भ्रमित, पथभ्रष्ट हो, निराशा से भरी थी कराह।  
परमात्मा ने प्रत्यक्ष प्रगट हो, आत्मजनों को दिखाई राह।।  
सहज राजयोग अपनायें तो, माया की दूर अड़चन हो।  
स्वप्न तभी साकार है सम्भव, जब नित नूतन चिन्तन हो।।  
सिंहावलोकन करें भूत का, क्या खोया, क्या पाया है?  
देह अहम् व धन की चाह ने, अशान्ति दे भटकाया है।।  
आत्मचिन्तन से करो विवेचन, तुम सतयुग के उड्गन हो।  
स्वप्न तभी साकार है सम्भव, जब नित नूतन चिन्तन हो।।  
चिरस्थायी सुख-शान्ति का है भ्रुकुटि बीच में ठिकाना।  
बहके-भटके मन से कह दो, सुपथ से अब नहीं डिगाना।।  
दुखभंजक एक ही हैं शिव, ज्ञान-चेतना की धुन हो।  
स्वप्न तभी साकार है सम्भव, जब नित नूतन चिन्तन हो।।

### सृष्टि का शोकेस

ब्र.कु.नीलम, इटावा

एक दिन बर्तनों की दुकान पर भिन्न-भिन्न प्रकार के बर्तन देखकर विचार चला कि इस सृष्टि रूपी गोदाम में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की मनुष्यात्माएँ भरी पड़ी हैं। जैसे बर्तनों के गोदाम में कुछ बर्तन तो ऐसे होते हैं जो बरसों से धूल से अटे पड़े हैं, मालिक उनको देखता तक नहीं है। कुछ ऐसे होते हैं जिन पर रोज़ कपड़ा फिराया जाता है और बहुत थोड़े ऐसे होते हैं जिन्हें बहुत प्यार से पोंछकर शोकेस में रखा जाता है, जिन पर आकर्षित होकर ही ग्राहक माल खरीदने आते हैं।

इसी प्रकार सृष्टि रूपी गोदाम में भी कुछ मनुष्यात्माएँ तो धूल सने बर्तनों की तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या..... आदि विकारों की धूल से अटी रहती हैं। ऐसी आत्माएँ स्वयं के भी काम नहीं आतीं क्योंकि वे स्वयं की धूल ही नहीं झाड़ सकतीं, न औरों से झाड़वाने को तैयार हैं इसलिए उन की तरफ सृष्टि के मालिक की नज़र ही नहीं जाती।

दूसरे प्रकार की आत्माएँ वो हैं जिन्होंने विकारी धूल झाड़कर, अपने तन-मन को चमकाना सीख लिया है। ऐसी आत्माओं पर सृष्टि के मालिक की नज़र जाती है और वे झाड़-पोंछ द्वारा (मुरली द्वारा) रोज़ उनकी चमक और बढ़ा देते हैं।

तीसरी श्रेणी में वे कोहिनूर हीरे की तरह चमकती हुई आत्माएँ आती हैं जिन्हें सृष्टि के मालिक शिवपिता प्रतिदिन वतन में बुलाकर, अपने हाथों से असीम स्नेह से दुलार-संवार कर सृष्टि के शोकेस में रखते हैं। वे सभी को आकर्षित करती हैं और उन्हें देखकर ही अन्य आत्माएँ भगवान की तरफ आकर्षित होती हैं। आइये स्वयं की जाँच करें कि मैं इनमें से किस प्रकार की आत्मा हूँ और मेरा स्थान कहाँ है? ❖

# राजयोग द्वारा जीवन परिवर्तन

● ब्रह्माकुमार सत्यनारायण, हैदराबाद

सन् 1999, 28 दिसम्बर को मुझे अचानक हृदय का दौरा पड़ा। तब मैं 46 साल का था। एक छोटे चिकित्सालय में जाँच होने के बाद मुझे बड़े चिकित्सालय में भेजा गया और कहा गया कि आपकी एंजियोग्राफी की जाएगी। चार जनवरी, 2000 को मेरी हृदय की धमनी में रुकावट का पता लगा जिसे समाप्त करने के लिए स्टैट (एंजियोप्लास्टी) डाला गया।

## शरीर और पैसे की बरबादी

हृदयाघात होने से पहले मेरा जीवन जानवरों से भी ज्यादा खराब था। मैं मांसाहार और शराब का बेहद सेवन करता था। दोपहर से ही शराब और मांस का सेवन शुरू कर देता था और रात होने पर मेरे पुत्र ही सहारा देकर मुझे घर लेकर जाते थे। हृदयाघात के बाद भी मैंने शराब पीना और मांसाहार नहीं छोड़ा। फरवरी, 2004 में पुनः हृदयाघात हुआ। इस बार का आघात बड़ा जोर का था और मुझे ओपन हार्ट सर्जरी करवानी पड़ी। फिर भी मैं शराब का सेवन नहीं छोड़ पाया। जीवन इसी प्रकार चलता रहा। तीन महीने बाद फिर हृदयाघात हुआ और फिर से स्टैट डाला गया। जीवन नरक से भी बदतर हो गया था। शराब, माँस के साथ-साथ धूम्रपान भी शुरू कर

दिया था। अंधकार के अतिरिक्त जीवन में कुछ नहीं बचा था और लगने लगा था कि अब अंत निश्चित है। शरीर और पैसा दोनों ही खूब बरबाद हो रहे थे।

## अंधेरी जिन्दगी में उजाला

जीवन विनाश की चरम सीमा पर था कि मुझे ईश्वरीय ज्ञान के बारे में जानकारी मिल गई। सन् 2007, 24 नवंबर को एक मंदिर में एक पर्चा मिला जिसमें लिखे पते अनुसार हैदराबाद के एक ब्रह्माकुमारी केन्द्र पर गीता-ज्ञान के कार्यक्रम में शामिल हुआ। मुझे शिवबाबा का सत्यज्ञान मिल गया जिससे मेरा जीवन परिवर्तित हो गया। मुझे लगा कि मेरे प्यारे शिवबाबा ने मुझे मरने के कगार पर से बचा लिया है। जैसे ही मुझे निश्चय हुआ, मैं आत्मा हूँ और परमात्मा मेरा पिता है, ज्ञान का बन्द नेत्र खुल गया। शक्ति मिल गई और ईश्वरीय ज्ञान के श्रवण और मनन के बाद जीवन सही राह पर चल पड़ा। एक मास के अंदर-अंदर शराब, माँस, सिगरेट और अन्य सभी विकार खत्म हो गए। मुझे ऐसा लगा कि अंधेरी कोठरी में एक प्रकाश का पुंज मिला और अंधेरी जिंदगी में उजाला होने लगा। तब से आज तक मैं बाबा की याद, सात्विक खान-पान आदि



सभी ईश्वरीय धारणाओं का दृढ़ता से पालन कर रहा हूँ।

## इलाज की ज़रूरत नहीं

आज मेरा हृदय और शरीर बिल्कुल स्वस्थ हैं। घर में सभी मुझ से खुश हैं। अब मैं स्वस्थ जीवन यापन कर रहा हूँ। मेरे पुराने दोस्तों का मुझसे मिलना-जुलना काफी कम हो गया है। जिनके साथ रात ग्यारह बजे तक और उसके बाद तक भी खाने-पीने का दौरा चलता था, अब कभी-कभार मिलने पर वे मुझे कहते हैं, 'देवता आ गया।' वे आश्चर्य करते हैं कि इतना जल्दी, इतना दृढ़ परिवर्तन कैसे आ गया। मैं कहता हूँ कि यह तो राजयोग का कमाल है। ज्ञान में आने के बाद एक दिन भी ईश्वरीय महावाक्य सुनने नहीं छोड़े। पिछले चार सालों में 22 बार ईश्वर-मिलन और ईश्वरीय सेवा के लिए मधुबन जा चुका हूँ। अब हृदय को इलाज की ज़रूरत नहीं पड़ती और डाक्टरों ने बताया है कि मेरा हृदय पूर्णतः स्वस्थ है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन  
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org





1. ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर (गुडगाँव)- मेधावी बालक कौटिल्य पंडित को ईश्वरीय सौगात देते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी। साथ में ब. कु. आशा बहन।
2. देवास- योगगुरु बाबा रामदेव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब. कु. प्रेमलता बहन।
3. कुल्लू- हिमाचल प्रदेश के शहरी विकास मंत्री भ्राता सुधीर शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब. कु. किरण बहन।
4. जमखंडी- 'अखिल भारतीय प्रामोण महिला सशक्तिकरण अभियान' को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए कर्नाटक की महिला एवं बाल विकास मंत्री बहन उमाश्री। साथ में ब. कु. मोरा बहन तथा अन्य।
5. चरखी दादरी- हरियाणा के सहकारिता एवं आवास मंत्री भ्राता सतपाल सागवान ब्रह्माकुमारीज मार्ग का उद्घाटन करते हुए। साथ में है ब. कु. प्रेमलता बहन तथा अन्य।
6. डेनमार्क- नेपाल के उच्चायुक्त भ्राता मुक्तिनाथ भट्ट के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद ब. कु. शशि बहन तथा अन्य समूह चित्र में।
7. लंदन- 'महिला एवं आध्यात्मिकता' विषय पर चर्चा के बाद ब. कु. साधना बहन प्रतिभागियों के साथ।
8. तिनसुकिया- अलविदा मधुमेह कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता राजेन्द्र सिंह, ब. कु. डा. श्रीमंत भाई, ब. कु. सत्यवती बहन, ब. कु. रजनी बहन तथा अन्य।
9. थिम्फू (भूटान)- ज्ञान-चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब. कु. मिश्रा भाई, ब. कु. अगद भाई, ब. कु. अनिल भाई, ब. कु. मौना बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 7.50, Issue : December 2013.



1. रायपुर- भाई दूज के अवसर पर छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम भ्राता शेखर दत्त को आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. कमला बहन। साथ में हैं प्रथम महिला श्रीमती सुशिमता दत्त एवं ब्र.कु. सविता बहन। 2. गुवाहाटी- आसाम के राज्यपाल महामहिम भ्राता जे.बी. पटनायक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पूनम बहन तथा ब्र.कु. संहिता बहन। 3. अवोहर- पांडिचेरी के उपराज्यपाल महामहिम भ्राता वीरेंद्र कटारिया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. दर्शना बहन। 4. अहमदाबाद (सुख-शान्ति भवन)- गुजरात के मुख्यमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी को दीपावली और नये वर्ष की शुभकामनायें देते हुए ब्र.कु. सरला बहन। साथ में ब्र.कु. अमर बहन 5. ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर (गुडगाँव)- हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुंजा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. आशा बहन तथा ब्र.कु. बृजमोहन भाई। 6. कटक- 'हिसा मुक्त समाज की स्थापना के लिए ईश्वरीय ज्ञान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, उड़ीसा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता विजय कुमार नायक, ब्र.कु. कमलेश बहन, ब्र.कु. रानी बहन, ब्र.कु. नीलम बहन तथा अन्य।